घटना का काल निर्धारण

(दशा एवं गोचर द्वारा)

लेखक

एस. के. साहनी

प्रकाशक

अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.)

X-35, ओखला फेस–2, नयी दिल्ली–110020

Phone (फोन): (011) 40541000 (50 Line) Fax (फैक्स): (011) 40541001

Email (इमेल)– mail@aifas.com

Web (वेब)– www.aifas.com

"समर्पण"

पिता स्व. श्री वी.डी. साहनी को उनके आशीर्वचनों के लिए

आभार

फ्यूचर पॉइंट (प्रा.) लि. के श्री अरुण कुमार बंसल का आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं, जिनके सतत उत्साहवर्धन के फलस्वरूप यह कार्य पूर्ण हो सकता। ज्योतिष में रुचि और उसका ज्ञान रखने वाले हर व्यक्ति के उत्साहवर्धन की उनकी विशेषता असाधारण है। उनके अभिनव प्रयासों से, ज्योतिष के क्षेत्र में नित्य नये कार्य हो रहे हैं। ज्योतिष के प्रति इस गहराई तक समर्पित ऐसा व्यक्ति मिलना कठिन है।

मैं ज्योतिष के आदरणीय शिक्षकों श्री के.एन.राव तथा श्री विनयादित्य का ऋणी हूं, जिनसे मैंने ज्योतिष की शिक्षा ग्रहण की।

मैं अपने प्रिय मित्रों श्री रविपुरी, श्री गौरीशंकर सैनी, श्री राजेश हसीजा तथा श्रीमती मिथिलेश गुप्ता को, उनकी सहायता और सहयोग के लिए, धन्यवाद देता हूं। मैं फ्यूचर पॉइंट प्रा.लि. के गणेश प्रसाद सिंह का भी आभारी हूं जिन्होंने मेरी पांडुलिपि का मनोयोगपूर्वक टंकण किया है। मैं उन छात्रों का भी आभारी हूं, जिन्होंने मुझे आंकड़े उपलब्ध कराए, जो विभिन्न अध्यायों में विषयों के सही प्रस्तुतीकरण में सहायक सिद्ध हुए।

इस पुस्तक के पूरा होने में लगभग एक वर्ष का समय लगा है। मैं अपनी सहधर्मिणी श्रीमती भारती साहनी तथा अपने बच्चों ईशा साहनी छवि साहनी जतिन साहनी को समय और ध्यान नहीं दे सका, जिसकी उन्हें जरूरत थी। उनके धैर्य तथा उत्साहवर्धन के कारण ही मैं पुस्तक की रचना को पर्याप्त समय दे सका। मैंने ज्योतिष अपनी सहधर्मियणी के धैर्य तथा उत्साहवर्धन के फलस्वरूप ही सीखा। यदि यह पुस्तक आपके हाथों में है तो केवल उनके प्रेम तथा स्नेह के कारण और इसके लिए मैं उनका ऋणी हूं और रहूंगा।

दिसंबर 2003 एस.के.साहनी

ए–79, रामप्रस्थ, पुलिस चौकी के सामने
साविता बिहार
गाजियाबाद, उ.प्र. पिन : 201011
EMAIL: astrocommunication1@indiatimes.com.
astrocommunication@eptra.com
Web : www.webastro.com
Phone : 9212092672

लेखक परिचय
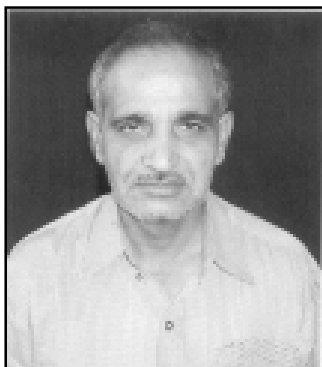
गत एक दशक से अधिक समय से ज्योतिष के क्षेत्र में कार्यरत श्री एस.के.साहनी एक जाने–माने ज्योतिर्विद हैं। उन्हें विश्वविख्यात ज्योतिर्विद् श्री के.एन.राव की अध्यक्षता में संचालित नई दिल्ली के Institute of Astrology, Bharatiya Bhavan (ज्योतिष के क्षेत्र में एक विश्वविख्यात संगठन) के द्वारा ज्योतिष अलंकार तथा ज्योतिष आचार्य की उपाधियों से विभूषित किया जा चुका है। श्री साहनी एक दशक से अधिक समय से ज्योतिष को खंगालते रहे हैं। उन्होंने ज्योतिष पर अनेक निबंध लिखे हैं, जो फ्यूचर समाचार, बाबाजी, नक्षत्रवाणी जैसी प्रतिष्ठित ज्योतिषीय पत्रिकाओं में छपते रहे हैं। उनकी ज्योतिषीय कृतियां नई दिल्ली, स्थित फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि. की प्रख्यात वेबसाइट Indianastrology.com तथा Webastro.com पर भी आती रही हैं। उन्होंने Timing of Events through Dasha and Transit नामक पुस्तक भी लिखी है, जिसे फ्यूचर पॉइंट प्रा.लि. ने प्रकाशित किया है। उन्होंने ज्योतिष पर देश–विदेश में आयोजित अनेक परिचर्चाओं में भाग लिया है, जिनमें सन् 2001 में मॉरीशस में वैदिक ज्योतिष पर आयोजित परिचर्चा प्रमुख है जिसमें उन्हें उनके व्याख्यान 'हृदय की समस्या : एक ज्योतिषीय आकलन' पर स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। हाल में नीदरलैंड्स में वैदिक विज्ञान पर आयोजित सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया, जिसमें उन्हें उनके **'शनि–चंद्र–युति और कर्क'** निबंध के लिए स्वर्ण पदक का पुरस्कार प्रदान किया गया। वह मानदेय शिक्षक के रूप में अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ के हौज खास चैप्टर में अध्यापन भी कर रहे हैं।

श्री सहनी विवाह, दांपत्य जीवन, संतति, शिशुओं के जन्म, स्वास्थ्य, चिकित्सा ज्योतिष, व्यवसाय और शिक्षा की समस्याओं के समाधान में दक्ष हैं। वह जातक के जन्म विवरण अर्थात् जन्मतिथि, जन्म स्थान और जन्म समय के अभाव में होरारी ज्योतिष के आधार पर समस्याओं के समाधान में भी कुशल हैं। वह आपके न केवल प्रश्नों के ज्योतिषीय उत्तर देते हैं, बल्कि रत्न चिकित्सा, यंत्र, मंत्र तथा दान–पुण्य का परामर्श देकर समस्याओं के समाधान के विविध उपाय भी बताते हैं।

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

LEO PALM
Available in Hindi and English
Rs.19,999/-
FUTURE POINT
Discount
Dhamaka
Now
Leo Palm
Only 19,999/-
Palm Centro Camera, Telephone with Leo Palm Software 19,999/- or Only Software 9,999/-
Leo Palm Package
Astrology • Matching • Varshphal • Horary • KP System
Lalkitab • Numerology • Panchang • Transit

Future Point (P) Ltd.

Future Point

पाठ 1

मूलभूत सिद्धांत

ज्योतिष के सिद्धांतों का एक संक्षिप्त विवरण यहां दिया जा रहा है ताकि ज्योतिष के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले लोग मनुष्य के जीवन में शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, बच्चों, भूमि, संपत्ति तथा वाहनों की प्राप्ति और विदेश यात्राओं से संबंधित घटनाओं के निर्धारण में विंशोत्तरी दशा के उपयोग का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

ग्रह नौ हैं : सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु। इनमें राहु तथा केतु छाया ग्रह हैं। ग्रहों के पथ को राशि चक्र कहते हैं।

यहां इन ग्रहों के विविध कारकत्व का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत है :

1. सूर्य – पिता, आत्मा, औषधि, राजनीति, राजकृपा, सत्ता में स्थान, ख्याति, प्रतिष्ठा, शौर्य, स्वास्थ्य, दायीं आंख आदि का कारक है।

2. चंद्र – माता, अनुभूति, स्त्रियों तथा उनसे मिलने वाले लाभ, मुखाकृति की आभा, सौंदर्य, बायीं आंख, तरल पदार्थ, मोती तथा उत्तर और दक्षिण दिशाओं का कारक है।

3. मंगल – छोटे भाई–बहन, साहस, पराक्रम, शारीरिक शक्ति, कलह, भूमि और संपत्ति, शस्त्राघात, पुलिस विभाग, इंजीनियरिंग, सैनिक, दुर्घटना, सशस्त्र बल, शत्रु और दक्षिण दिशा का कारक है।

4. बुध – बुद्धि, अत्यधिक पढ़ने की आदत, वाणी, ज्योतिष, लेखन, प्रकाशन, गणित, बैंकिंग, अंकेक्षण, मामा, स्नायु तंत्र, त्वचा, उत्तर दिशा आदि का कारक है।

5. बृहस्पति – संपत्ति, उच्च जीवन स्तर, बच्चों का जन्म, बड़ा भाई, ज्ञान, सतो गुण, परामर्श, धर्म तथा उससे संबंद्ध विषय, प्रतिष्ठा, महत्त्व, वेद का ज्ञान, मोटापा, व्याख्यान, सिद्धांत, विधि विशेषज्ञ, स्त्री की जन्मकुंडली में पति, राजनीतिक कूटनीति, यकृत, पश्चिम–उत्तर दिशाओं आदि का कारक है।

6. शुक्र – पत्नी, पति, काम, वाहन, कला, गायन, आभूषण, मूल्यवान रत्नों, विलासिता या विलासिता की सामग्रियों, सौंदर्य, मनोरंजन स्थलों, रसायनों आदि का कारक है। शुक्र से संबद्ध व्यवसाय के क्षेत्र हैं फिल्मोद्योग, नृत्य, नाटक, वस्त्र या वस्त्रोयोग, इत्र और सुगंधित द्रव्य, स्त्रियों से संबंधित वस्तु, संगीत, होटल आदि। यह गुप्तांगों, गुर्दा, दक्षिण–पूर्व दिशाओं आदि का भी द्योतक है।

7. शनि – दीर्घायु, मृत्यु, भाग्य, भय, निर्धनता, श्रम, अपमान, सेवा, नौकर, पुरानी बीमारी, क्रूर कार्य आदि का कारक है। राजनीति में शनि नेता का द्योतक है। यह लोहा और इस्पात, काली वस्तु, पश्चिम दिशा आदि का द्योतक भी है।

8. राहु – दादा, कटु बोली, जुआ, गूढ शास्त्र, विदेशीयों, भ्रम, विधवा, तीर्थस्थान, अत्यधिक पीड़ा, दक्षिण–पश्चिम दिशा आदि का कारक है।

9. केतु – नाना, गणितीय योग्यता, अचानक दुर्घटना, विदेशी भाषा, प्रतिभा, चर्म, शत्रु प्रदत्त पीड़ा, सफेद दाग, सफेद दाग, दक्षिण–पूर्व दिशाओं आदि का कारक है।

जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित होती है और प्रत्येक भाव का अपना कारकत्व होता है। किसी जन्मकुंडली का विश्लेषण करने के लिए उसके प्रत्येक भाव तथा नौ ग्रहों के कारकत्वों का ज्ञान आवश्यक है। यहां कुंडली के प्रत्येक भाव के कारकत्व का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

लग्न या प्रथम भाव :

जन्मकुंडली का प्रथम भाव सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। इसे लग्न भी कहा जाता है। यह मुख्यतः जातक के शरीर का द्योतक है, इसीलिए इसे शरीर का भाव भी कहते हैं। यह जातक के स्वास्थ्य, स्वभाव, दीर्घायु, सुख, शिर तथा केश का द्योतक है। शनि पहले भाव का कारक ग्रह है।

द्वितीय भाव :

इसे कुटुंब भाव कहते हैं। यह धन, मान, बोली, भोजन, दायीं आंख, मारक भाव, मुखाकृति, जीभ आदि का कारक है। धन के लिए बृहस्पति तथा वाणी के लिए बुध इस भाव के कारक ग्रह हैं।

तृतीय भाव :

यह सहोदर भाव कहलाता है। यह भाव छोटे भाइयों या बहनों, प्रयास, छोटी यात्राएं, लेखन, दीर्घायु, साहस, कान, नौकरों, मित्रों, पड़ोसियों, मृत्यु के कारण, कंधों तथा गुदा का कारक है। सहोदरों और पराक्रम के लिए मंगल तथा नौकरों के लिए शनि तृतीय भाव के कारक ग्रह हैं।

चतुर्थ भाव :

इसे मातृ भाव कहा जाता है। यह शिक्षा, ज्ञान, वाहन, घर, सिंहासन, आराम, माता, आवास, पारिवारिक सुख, छाती आदि का कारक है। माता के लिए चंद्र, वाहन के लिए शुक्र और भूमि तथा संपत्ति के लिए मंगल चतुर्थ भाव के कारक ग्रह हैं।

पंचम भाव :

यह भाव संतान, बुद्धि, क्षमता, रोमांस और भावना, प्रतिष्ठा, व्यवसाय में बाधा, पिछले जन्म के पुण्य, मंत्र, मंत्रियों से संपर्क, उच्च शिक्षा, पिछले जन्म के पुण्य, उदर आदि का द्योतक है। संतान के लिए बृहस्पति और शिक्षा के लिए बुध पंचम भाव के कारक ग्रह हैं।

षष्ठ भाव :

यह भाव शत्रुओं, बीमारियों, ऋण, कलह, कानूनी मामलों, हानि, दुर्घटनाओं, युद्ध, उत्साह, कमर आदि से संबंद्ध है। दुर्घटनाओं के लिए मंगल, बीमारी के लिए शनि तथा मातृ पक्ष के लिए बुध इस भाव के कारक ग्रह हैं।

सप्तम भाव :

इसे कलत्र भाव कहा जाता है और इसका संबंध मुख्यतः पत्नी तथा पति से है। यह विवाह, दांपत्य, जीवन साथी, व्यवसाय में साझेदार, मारक भाव, उदर के निचले भाग, गुप्तांगों आदि का द्योतक है। विवाह तथा पत्नी के लिए शुक्र और पति के लिए बृहस्पति सप्तम भाव के कारक ग्रह है।

अष्टम भाव :

इसे आयुष भाव कहा जाता है। यह दीर्घायु, पुराने तथा असाध्य रोगों, दुःख, दरिद्रता, मृत्यु, पैतृक संपत्ति तथा मलद्वार का द्योतक है। दीर्घायु के लिए शनि इस घर का कारक है।

नवम भाव :

इसे भाग्य भाव या धर्म भाव कहा जाता है। यह मुख्य रूप से पिता, संतानों, भाग्य, गुरु, विदेश यात्रओं, जंघाओं आदि का द्योतक है। पिता के लिए सूर्य और धर्म के लिए बृहस्पति इस घर के कारक हैं।

दशम भाव :

यह कर्म भाव है और व्यवसाय, जीविका, व्यापार, रोजगार, घुटने, ख्याति आदि का प्रतीक है। सूर्य इस भाव का कारक ग्रह है।

एकादश भाव :

यह लाभ स्थान है। यह बड़े भाई, बहन, लाभ, आय, इच्छाओं की पूर्ति, दुर्घटनाओं, टांगों और बायें कान का प्रतीक है। वृहस्पति इसका कारक ग्रह है।

द्वादश भाव :

इसे व्यय स्थान कहते हैं और यह मुख्यतः व्यय, विदेश, जेल, अस्पताल, मोक्ष, शयन सुख, बंटवारे, पांवों और बायीं आंख का द्योतक है। बंटवारे के लिए शनि, मोक्ष के लिए केतु और शयन सुख के लिए शुक्र इस घर के कारक हैं।

यहां विभिन्न कारक ग्रहों तथा भावों के कारकत्व का विश्लेषण दिया जा रहा है :

माता के लिए चंद्र और चंद्र से चतुर्थ भाव, पिता के लिए सूर्य और सूर्य से नवम भाव, संतान के लिए गुरु और गुरु से पंचम भाव, पत्नी के लिए शुक्र और शुक्र से सप्तम भाव तथा छोटे भाई–बहनों के लिए मंगल और मंगल से तृतीय भाव।

वाहनों के लिए बुध तथा बुध से चतुर्थ भाव, भू–संपत्ति के लिए मंगल और मंगल से चतुर्थ भाव और शिक्षा के लिए बुध तथा मंगल से पंचम भाव।

इस प्रकार हमने ग्रहों, जन्मकुंडली के भावों तथा भावों के कारकत्वों का अध्ययन किया। किसी जन्मकुंडली के सटीक विश्लेषण के लिए हमें विभिन्न ग्रहों के बलों के मूल्यांकन की विधि का ज्ञान होना चाहिए। सबसे पहले हमें जन्मकुंडली में ग्रह का बल देखना चाहिए और तब संबद्ध में उसके बल का मान निकालना चाहिए। यदि ग्रह बली है, तो वह अपने तथा भाव स्वामी के कारकत्व से संबंधित शुभ फल देगा। यदि ग्रह दुर्बल है तो अपने और जिस भाव का वह स्वामी है उस भाव से संबंधित शुभ फल नहीं दे पाएगा।

कोई ग्रह यदि उच्च राशि, मूल त्रिकोण राशि, स्वराशि या मित्र राशि में हो, किसी शुभ भाव का स्वामी और नैसर्गिक शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो, या वर्गोत्तम हो, तो बली होता है। यदि शत्रु राशि, या अपनी नीच राशि में हो, छठे, आठवें या 12वें भाव का स्वामी हो या छठे, आठवें अथवा 12वें में स्थित हो या राशि संधि में अशुभ राशियों से युत या दृष्ट हो, तो दुर्बल होता है।

पाठ 2
जन्मकुंडली की व्याख्या कैसे करें

जन्मकुंडली के अध्ययन के क्रम में उसके विभिन्न भावों के बहुविधि विश्लेषण की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया के कई चरण होते हैं। सरल विश्लेषण के लिए निम्नलिखित चरण निर्धारित हैं :

1. लग्न, सूर्य और चंद्र के बल का मान निकाल कर जन्मकुंडली का सामान्य मूल्यांकन
2. केंद्रों तथा त्रिकोणों का मूल्यांकन
3. विभिन्न भाव स्वामियों की स्थिति की जांच
4. भावों तथा उनके स्वामियों के अंतर्संबंधों की जांच
5. अंततः जन्मकुंडली की वर्तमान दशा पद्धति की जांच।
6. यह घटनाक्रम का पता लगाने में सहायक होगी।

जातक का व्यक्तित्व लग्न स्वामी तथा लग्न और जन्मकुंडली के लग्नस्वामी पर अन्य ग्रह के प्रभावों पर निर्भर करता है। चंद्र जातक के मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है। किसी अन्य ग्रह की युति या दृष्टि के साथ चंद्रमा पर उसका प्रभाव चंद्रमा से युत या दृष्ट ग्रह के कारकत्व के अनुसार जातक के चित्त को प्रभावित करता है। यदि लग्न स्वामी पीड़ित हो या कुंडली में अशुभ स्थान में स्थित हो, तो जातक के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। पीड़ित चंद्र और अशुभ स्थान में उसकी स्थिति से जातक की मानसिक स्थिति दुर्बल होती है। सूर्य आत्मा का प्रतीक है और इसके पीड़ित होने या अशुभ स्थान में स्थित होने पर जातक को जीवन में सम्मान नहीं मिलता।

केंद्रों तथा त्रिकोणों का महत्त्व :

जन्मकुंडली में केंद्रों तथा त्रिकोणों का मूल्यांकन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यदि केंद्र और त्रिकोण शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों, तो जन्मकुंडली बलवान होती है। त्रिकोण भी अति महत्वपूर्ण है। पंचम तथा नवम भाव त्रिकोण कहलाते हैं क्योंकि पंचम भाव पूर्व जन्म के संचित अच्छे या बुरे कर्मों का तथा नवम भाव धार्मिक कृत्यों का भाव है। भाव स्वामी पर त्रिकोणों का प्रभाव जातक के सुरक्षा कवच के समान है; दृष्टि या युति संबंधों के द्वारा किसी भी भाव या भाव स्वामी पर उसका प्रभाव संबंधित भाव या भाव स्वामी के कारकत्व की रक्षा करता है।

व्यक्तिगत जन्मकुंडली का मूल्यांकन किसी जन्मकुंडली विशेष की व्याख्या के लिए उसके विभिन्न भावों के बल तथा दुर्बलता का मूल्यांकन करना चाहिए। किसी भाव विशेष के परिणामों का विश्लेषण करते समय, हमें भाव और भाव स्वामी पर अन्य ग्रहों के प्रभावों की सावधानी पूर्वक जांच करनी चाहिए।

किसी भाव या भाव स्वामी पर अन्य ग्रह निम्नलिखित ढंग से प्रभाव डालते हैं :

1. **स्थिति** : किसी अन्य भाव में स्थित ग्रह का उस भाव से संबंध उसकी स्थिति के कारण होगा और जिस भाव में वह स्थित है उस पर प्रभाव डालेगा।

2. **दृष्टि** : किसी भाव या भाव स्वामी पर दृष्टि डाल रहे किसी ग्रह का उस भाव से संबंध होगा जिसका वह स्वामी है ओर जिस पर वह दृष्टि डाल रहा है।

3. **युति** : यदि दो भावों के स्वामी एक साथ किसी भाव में स्थित हों, तो दोनों के बीच एक संबंध स्थापित हो जाता है और दोनों अपने–अपने स्वामित्व और कारकत्व के अनुरूप फल देते हैं। उनकी इस अवस्था को युति कहते हैं।

संभावनाओं और फलों का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित तथ्यों की जांच करनी चाहिए :

1. बच्चे की जन्मकुंडली के विश्लेषण के क्रम में सबसे पहले पंचम भाव अर्थात पंचम भाव पर विभिन्न ग्रहों की युति, दृष्टि या उनके बीच संबंध को देखते हुए उनके प्रभाव की जांच करनी चाहिए।
2. दूसरे, संबंध भाव के स्वामी की स्थिति की जांच करनी चाहिए। संतान पक्ष के लिए पंचम भाव स्वामी की स्थिति देखी जानी चाहिए, जैसे वह कहां स्थित है और युति और दृष्टि संबंध के कारण पंचम भाव स्वामी पर अन्य ग्रहों का क्या प्रभाव है।
3. घटना विशेष के कारक की स्थिति की जबकि संतान पक्ष के लिए संतान के कारक बृहस्पति की स्थिति की जांच करनी चाहिए। बृहस्पति पर अन्य ग्रहों के प्रभाव की जांच करनी चाहिए।
4. हमें कारक से संबंध भाव की जांच भी करनी चाहिए। संतान पक्ष के लिए बृहस्पति से पंचम भाव की जांच और इस भाव पर अन्य ग्रहों के प्रभावों का मूल्यांकन भी करना चाहिए।

यदि भाव, भाव स्वामी, कारक और कारक से संबंध भाव शुभ ग्रहों के प्रभाव में हों, तो जातक को संबंधित भाव से संबंधित शुभ फल प्राप्त होंगे और यदि वे नैसर्गिक या अशुभ ग्रहों के प्रभाव में हों, तो जातक को संबंध भाव के अशुभ प्रभाव प्राप्त होंगे। हमें भाव स्वामी के ग्रहाक्रांत राशीश पर भी दृष्टि डालनी चाहिए। इससे संबंध भाव के फलों के मूल्यांकन में भी सहायता मिलती है।

संबद्ध वर्ग कुंडली में भाव स्वामी की स्थिति समान रूप से महत्वपूर्ण है। हमें संबद्ध भाव स्थित ग्रह के बल का मूल्यांकन भी करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, यदि संतान पक्ष देखना हो, तो हमें सप्तमांश कुंडली में पंचम भाव स्वामी के बल तथा सप्तमांश के भाव स्वामी की स्थिति की जांच की जानी चाहिए।

भावों, भाव स्वामियों, कारकों, कारकों से संबंद्ध भाव, वर्ग कुंडली में संबंध भाव के स्वामी की और संबद्ध वर्ग कुंडली में लग्न स्वामियों की स्थिति के अध्ययन से संबद्ध भाव के शुभाशुभत्व फलों का ज्ञान प्राप्त होता है।

घटनाओं का कालमापन :

जन्मकुंडली और संबद्ध वर्गीय कुंडलियों का भाव, भाव स्वामी, कारक और कारक से संबंध भाव की स्थिति के अनुसार कुंडली में केवल शुभव या अशुभ संभावनाओं का संकेत देते हैं। किंतु, घटना के फल के समय का ज्ञान विभिन्न ग्रहों की दशा/अंतर्दशा से प्राप्त होता है। जातक फल उसके जन्म के समय चल रही दशा के अनुसार मिलता है। यदि कोई शुभ दशा सक्रिय हो, तो जातक को संबंद्ध दशानाथ के कारकत्व और कुंडली में उसके स्वामित्व को अनुसार फल की प्राप्ति होती है। शिक्षा, व्यवसाय, विवाह, संतान, वाहन–क्रय, भू–संपत्ति, विदेश यात्रा आदि घटनाओं के काल निर्णय के लिए प्रत्येक विषय की विशद व्याख्या अलग–अलग अध्यायों में की जाएगी। घटनाक्रम के काल–निर्णय के लिए न केवल सिद्धांतों का वर्णन किया जाएगा बल्कि चित्रण करने का हर संभव प्रयास किया जाएगा।

पाठ 3
दशा विश्लेषण

ग्रह दशा घटनाक्रम के काल निर्णय की सूचक है। कोई दशा स्वामी अपने स्वामित्व तथा युति, दृष्टि अथवा स्थिति के द्वारा दशा स्वामी को प्रभावित करने वाले ग्रहों के फल के अनुसार फल देता है। दशानाथ अपने स्वामित्व और अपने अधिग्रहित भाव का फल देता है।

दृष्टि : दशानाथ अपने ऊपर दृष्टि डाल रहे ग्रह के उसके नैसर्गिक कारकत्व और भाव विशेष पर उसके स्वामित्व के कारकत्व के अनुसार भी फल देता है।

युति : यदि दशानाथ किसी ग्रह से युत हो, तो उस ग्रह के नैसर्गिक कारकत्व और कुंडली में किसी भाव विशेष पर उसके स्वामित्व के कारकत्व का फल देता है।

ग्रह कुंडली में स्वामित्व के अनुसार फल देते हैं। यहां जनमकुंडली के 12 भावों के स्वामियों के सामान्य फलों का वर्णन किया जा रहा है।

1. नैसर्गिक रूप से अशुभ होने के बावजूद लग्नेश की दशा में ग्रह शारीरिक सुख, संपत्ति और सम्मान दिलाता है, किंतु मारक भाव में स्थित होने के कारण स्वास्थ्य संबंधी कष्ट भी देता है। मैंने देखा है कि द्वितीय भाव स्वामी का दशानाथ सप्तम से अष्टम भाव में होने पर जीवनसाथी के लिए शुभ नहीं होता।

3. तृतीय भाव स्वामी की दशा में छोटे भाई–बहनों का जन्म होता है। यह दशा छोटी यात्रा का संकेत देती है और स्वास्थ्य संबंधी कष्ट देती है क्योंकि तृतीय भाव अष्टम भाव से अष्टम है।

4. सुखेश अर्थात् चतुर्थ भाव स्वामी वाहन, भवन, संपत्ति, सामान्य सुख, राजनीतिज्ञ होने पर मंत्री–पद आदि देता है। नवम अर्थात् पितृ भाव के चतुर्थ से अष्टम होने के कारण यह दशा पिता को कष्ट देती है।

5. पंचम भाव के त्रिकोण होने के कारण पंचम भाव स्वामी की दशा अत्यंत शुभ होती है। इस दशा के दौरान जातक को शिक्षा, धन तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। किंतु, बच्चे की मां के लिए यह शुभ नहीं है, क्योंकि यह चतुर्थ अर्थात् मातृभाव से दूसरा है।

6. षष्ठम भाव स्वामी की दशा रोग, शत्रु भय, दुर्घटना, मुकदमे, बच्चों को कष्ट आदि की सूचक है। यह दशा व्यवसाय के लिए शुभ है। षष्ठम भाव कर्म भाव से नवम है।

7. सप्तम भाव स्वामी की दशा के दौरान शारीरिक कष्ट, विवाह आदि की संभावना रहती है। यह उच्च पद और समाज में यश आदि की सूचक भी है क्योंकि दशम भाव से दशम होने के कारण यह कर्म भाव का विकल्प है।

8. अष्टम भाव की दशा सामान्यतया, मृत्युभय, पत्नी की मृत्यु, शारीरिक कष्ट आदि देती है।

9. नवम भाव स्वामी की दशा अत्यंत शुभ है। इस दशा के दौरान जातक भाग्यवश उन्नति करता है और उसे सम्मान, सरकार से लाभ आदि की प्राप्ति होती है। उसे तीर्थाटन तथा विदेश यात्रा के अवसर प्राप्त होते हैं और उच्च शिखा के माध्यम से उन्नति की संभावना रहती है।
10. दशम भाव स्वामी की दशा में जातक को सरकार से सहायता और धन की प्राप्ति होती है। यश और ख्याति में वृद्धि तथा व्यवसाय में उन्नति की संभावना भी रहती है। किंतु यह दशा माता के लिए शुभ नहीं होती क्योंकि दशम भाव माता के भाव से सप्तम है।
11. लाभेश अर्थात एकादश भाव का स्वामी की दशा में भाव बल के कारण आय में उन्नति होती है। यह दशा यद्यपि धन/आय के लिए शुभ है, किंतु इस दशा के दौरान जातक को बीमारियों का सामना भी करना पड़ता है, क्योंकि एकादशम भाव षष्ठम भाव से षष्ठम है।
12. द्वादश भाव का स्वामी की दशा में धन की हानि, शारीरिक कष्ट आदि की संभावना रहती है, किंतु जातक को शयन सुख और विदेश यात्रा के अवसर भी प्राप्त होते हैं।

दशानाथ अथवा अंतर्दशानाथ जन्म कुंडली, नवांश तथा संबद्ध वर्ग कुंडलियों में अपने बल के अनुसार फल देता है।

यह दशानाथ या अंतर्दशानाथ निम्न स्थितियों में फल देता है :

1. यह ग्रह किसी शुभ भाव अर्थात् केंद्र या त्रिकोण का स्वामी हो।
2. यह केंद्र या त्रिकोण में स्थिति हो।
3. यह अपनी उच्च राशि, मूल त्रिकोण राशि या मित्र राशि में हो।
4. यह शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो।
5. यह वर्गोत्तम हो।
6. यह दिक्बली हो।

दशानाथ या अंतर्दशानाथ निम्नलिखित स्थितियों में अशुभ फल देता है।

1. ग्रह, षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव का स्वामी हो।
2. यह षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो।
3. यह नीच राशि या शत्रु राशि में हो, अस्त हो या राशि गंडांत में हो।
4. यह अशुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो।
5. यह नवांश अथवा संबद्ध वर्ग कुंडली में कमजोर हो।

अब तक हमने ग्रहों और भावों का कारकत्व और जन्मकुंडली तथा दशा विश्लेषण की विधि का अध्ययन किया। अब हम शैक्षिक उपलब्धियों, व्यवसाय में उन्नति, विवाह के समय, बच्चों के जन्म, वाहन और भू–संपत्ति के क्रय के समय, विदेश यात्रा आदि घटनाओं के काल निर्धारण का विस्तृत अध्ययन करेंगे। इन विषयों पर हम आगामी अध्यायों में अलग–अलग और विस्तृत चर्चा करेंगे क्योंकि अब तक हम ज्योतिष के मूल सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

पाठ 4

ग्रह गोचर का महत्व

राशिचक्र में ग्रह अपनी गति से सतत् गोचर और एक राशि से दूसरी में प्रवेश करते रहते हैं। जातक के जन्म के समय ग्रहों की राशियों में स्थिति को जन्मकुंडली कहते हैं। जन्म समय के अतिरिक्त ग्रहों के एक राशि से दूसरे राशि में प्रवेश को गोचर कहते हैं। शुभ–अशुभ फलों को जानने में ग्रह गोचरित की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गोचर फल का विचार जन्मकुंडली में चंद्र की राशि के आधार पर किया जाना चाहिए। चंद्र के गोचर से दिन का तथा सूर्य के गोचर से मास का फल ज्ञात किया जाता है। गुरु के गोचर से एक वर्ष का जबकि शनि के गोचर से 2 वर्ष 6 महीनों के फलों का विचार किया जाता है। ग्रह गोचर का अध्ययन ग्रहों की वर्तमान दशा को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

गोचर तथा दशा सिद्धांत :

1. यदि ग्रह दशा तथा ग्रह गोचर दोनों शुभ फल का संकेत दे रहे हों, तो जातक का भाव, दशानाथ स्वामी और भाव जिसमें ग्रह गोचर कर रहा हो उससे संबंधित शुभ फल प्राप्त होते हैं।
2. यदि दशा तथा गोचर दोनों अशुभ फल का संकेत दे रहे हों, तो अशुभ फल प्राप्त होंगे। दशा अशुभ का और गोचर शुभ का संकेत दे रहा हो, तो जातक को मिले–जुले फल प्राप्त होंगे।
3. यदि दशा और ग्रह गोचर अशुभ फलों का संकेत दे रहे हों, तो काल विशेष अत्यंत अशुभ होगा और जातक को भाव, दशानाथ स्वामी तथा जिस भाव में ग्रह गोचर कर रहा हो उसके स्वामी के अनुसार अशुभ फलों की प्राप्ति होगी।

अब चंद्र राशि से विभिन्न भावों में गोचर कर रहे विभिन्न ग्रहों के गोचर के परिणामों पर विचार करेंगे। इस अध्याय में प्रत्येक ग्रह फलों का विस्तृत वर्णन संभव नहीं है, इसलिए यहां चंद्र राशि की स्थिति से विभिन्न स्थानों/भावों में सभी नौ ग्रहों में गोचर के फलों का सारणीबद्ध संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

ग्रह	**जन्मकालिक चंद्र से गोचर भाव**	**संक्षिप्त परिणाम**
सूर्य	1, 2, 5, 8, 9, 12	सूर्य इन भावों में अशुभ फल देता है, जातक का हर प्रयास निष्फल जाएगा और आंख में पीड़ा होगी।
	5	इस भाव में सूर्य अधिकतर अशुभ फल देता है। अत्यधिक व्यय, अनेक रोगों तथा वाद–विवादों में पराजय की संभावना रहती है।
	3, 6, 10, 11	इन भावों में सूर्य अत्यंत शुभ फल देता है। जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और आय, लाभ, पदोन्नति, नए

		कार्य आदि की संभावना रहती है।
चंद्र	2, 4, 5, 9, 12	इन भावों में चंद्र दुःख, मान हानि, अवांछित व्यय, कार्यों में बाधाएं आदि अशुभ फल देता है।
	8	इस भाव में चंद्र मानसिक कष्ट, माता को कष्ट आदि अत्यंत अशुभ फल प्राप्त होते हैं।
	1, 3, 6, 7, 10, 11	इन भावों में चंद्र होने पर जातक को अति शुभफल प्राप्त होते हैं। सुख–सुविधाओं तथा आय में वृद्धि होती है।
मंगल	1, 2, 4, 5, 8, 9, 10, 12	इन भावों का मंगल जातक को अशुभ फल देता है और उसे दुःखों, कष्टों और रोगों का सामना करना पड़ता है।
	7	इस भाव का मंगल विवाद, मुकदमे, हानि, रोग आदि का द्योतक है।
	3, 6, 11	शुभ फल। सुख–सुविधा, लाभ आदि की प्राप्ति
बुध	1, 3, 4, 5, 7, 9, 12	कठिनाइयों, अत्यधिक व्यय, चर्म तथा स्नायु के रोगों आदि की संभावना।
	2	अत्यधिक अशुभ फल, सभी क्षेत्रों में बाधाएं, धन की हानि।
	6, 8, 10, 11	उत्तम स्वास्थ्य, सुख–समृद्धि, शिक्षा, आय आदि जैसे अति शुभ फल।
बृहस्पति	1, 4, 10	इन भावों का बृहस्पति भय, चिंता, मान हानि, खराब स्वास्थ्य, अत्यधिक व्यय आदि का द्योतक है।
	3 और 6	आदर–मान में कमी, मनोबल की हानि, शत्रुता आदि अशुभ फल।
	2, 5, 7, 9, 11, 6	शुभ फल जैसे उत्तम स्वास्थ्य, सुख–साधनों की प्राप्ति, व्यापार में उन्नति, यात्राएं, आभूषणों की प्राप्ति आदि।
शुक्र	7, 10	दुःख, अत्यधिक व्यय, सुख–साधनों में कमी, काम शक्ति में क्षीणता, पत्नी की अस्वस्थता जैसे अशुभ फल।
	6	अति अशुभ फल, गुप्त रोग, ऋण, स्त्रियों द्वारा मानहानि आदि की संभावना।
	1, 2, 3, 4, 5, 9, 11, 12	सुखपूर्ण जीवन, उत्तम स्वास्थ्य, काम–सुख, आय में वृद्धि, स्त्रियों से लाभ, व्यापार में लाभ आदि।
शनि	1, 2, 4, 5, 7, 8, 10, 12	अत्यधिक व्यय, ऋण आदि अशुभ फल।

	3, 6, 9, 11	लाभ, सुख–साधनों की प्राप्ति, अर्थ लाभ, पदोन्नति, कार्यों में सफलता आदि शुभफल।
राहु/केतु	1, 2, 4, 5, 7, 8, 10, 12	दुःख, कष्ट, तकलीफ, अधः पतन, अत्यधिक व्यय आदि।
	9	दुर्भाग्य, बीमारियां आदि अत्यंत अशुभ फल।
	3, 6, 11	शुभ फल – उत्तम स्वास्थ्य, कार्यों में सफलता, लाभ, सुख–साधनों की प्राप्ति, व्यवसाय में उन्नति, चौतरफा सुख–समृद्धि।

उपर्युक्त फलों का संक्षेप में वर्णन किया गया है। ग्रहों की कुछ खास भावों में स्थिति के कारण यदि वेध हो, तो इन शुभ–अशुभ फलों में परिवर्तन हो जाता है।

नीचे अलग–अलग ग्रहों के वेध भावों का वर्णन किया जा रहा है।

सूर्य	3, 6, 10, 11	
वेध भाव	9, 12, 4, 5	(यदि इन भावों में शनि स्थित हो, तो वेध नहीं होता।)
वेध भाव	3, 6, 10, 11	
सूर्य स्थिति	9, 12, 4, 5	
वेध भाव	3, 6, 10, 11	
चंद्र स्थिति	7, 1, 6, 11, 10, 3	
वेध भाव	2, 5, 12, 8, 4, 9	(यदि इन भावों मे बुध स्थित हो, तो वेध नहीं होता।)
चंद्र स्थिति	2, 5, 8, 4, 9	
वेध भाव	7, 1, 6, 11, 10, 3	
मंगल स्थिति	3, 11, 6	
वेध भाव	12, 5, 9	
मंगल स्थिति	12, 2, 5, 9	
वेध भाव	3, 11, 6	
बुध स्थिति	2, 11, 9, 5, 7, 11	
वेध भाव	12, 8, 10, 4, 3, 12	(यदि इन भावों में चंद्र स्थित हो, तो वेध नहीं होता।)
गुरु स्थिति	2, 4, 6, 8, 10	
वेध भाव	5, 3, 9, 1, 8	
गुरु स्थिति	12, 8, 10, 4, 3	
वेध भाव	2, 11, 9, 5, 7	
शुक्र स्थिति	1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12	
वेध भाव	8, 7, 1, 10, 9, 5, 11, 6, 3	

शुक्र स्थिति	8, 7, 1, 10, 9, 5, 11, 6, 3	
वेध भाव	12, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12	
शनि स्थिति	3, 6, 11	
वेध भाव	12, 9, 5	(यदि इन भावों में सूर्य हो तो वेध नहीं होता)
शनि स्थिति	12, 9, 5	
वेध भाव	3, 6, 11	
राहु/केतु स्थिति	3, 6, 11	
वेध भाव	12, 9, 5	

विभिन्न ग्रहों के विभिन्न वेध भावों का उल्लेख उपर्युक्त है। यदि गोचर का ग्रह शुभ भाव में हो, किंतु किसी दूसरे ग्रह की स्थिति के कारण वेध हो, तो यह शुभफल का नाश कर देगा। इसके विपरीत यदि ग्रह वेध भाव में गोचर कर रहा हो, तथा इसी समय अन्य ग्रह की स्थिति के कारण वेध हो रहा हो, तो अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाएंगे।

पाठ 5
वर्ग कुंडली का महत्त्व

ग्रह पथ को राशि चक्र कहते हैं। यह 12 भागों में बंटा है और प्रत्येक भाग को राशि कहते हैं। प्रत्येक राशि बराबर–बराबर 30 अंश की है। वर्ग कुंडली राशियों के वर्गीकरण के आधार पर बनायी जाती है इसलिए इसे वर्गकुंडली कहा जाता है।

उदाहरणस्वरूप, यदि नवांश कुंडली बनानी हो, तो राशि को 9 भागों में बांटा जाता है और हर भाग 3 अंश 20 मिनट का होता है। वर्ग कुंडली लग्न के जन्म अंश तथा जन्मकुंडली में विभिन्न ग्रहों को ध्यान में रखकर बनायी जाती है।

जन्मकुंडली के विस्तृत अध्ययन के लिए वर्ग कुंडली का अध्ययन आवश्यक होता है। वर्ग कुंडली जन्म कुंडली की पूरक है और घटनाओं के विश्लेषण के लिए इसका विशिष्ट रूप से अध्ययन करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि संतान संबंधी विषय का अध्ययन करना हो, तो सप्तमांश कुंडली (डी–7) का अध्ययन जन्म कुंडली (डी–1) से जोड़कर करना चाहिए। वर्ग कुंडली का अध्ययन जन्म ग्रह के बल का मान निकालने के लिए भी किया जाना चाहिए।

वर्ग कुंडली का अध्ययन उसी विधि से किया जाना चाहिए जिस विधि से राशि कुंडली का अध्ययन किया जाता है। वर्गकुंडली का अध्ययन करते समय उसके लग्न, लग्नस्वामी तथा संबद्ध भाव और संबद्ध भाव के स्वामी को महत्व दिया जाना चाहिए। उदाहरण स्वरूप, यदि संतान संबंधी विषय का अध्ययन करना हो, तो निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करना चाहिए :

1. सप्तमांश कुंडली में पंचम भाव की स्थिति
2. सप्तमांश के लग्न और लग्नस्वामी की स्थिति
3. सप्तमांश का पंचम भाव और उसके पंचम भाव का स्वामी
4. सप्तमांश कुंडली में संतान के कारक बृहस्पति की स्थिति

यदि जन्म कुंडली और संबंद्ध वर्ग कुंडली से उक्त स्थिति का संकेत मिले तो उत्कृष्ट फलादेश किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, डी–1 कुंडली में सप्तमांश कुंडली का पंचमेश व षष्ठम, अष्टम या द्वादश भाव में और सप्तमांश का लग्नेश या पंचमेश भी षष्ठम, अष्टम या द्वादश भाव में हो, तो संतान की आशा क्षीण होगी। दूसरे मामले में, यदि डी–1 का पंचमेश और सप्तमांश का पंचमेश दोनों शुभ भावों में और शुभ दृष्ट हों, तो संतानोत्पत्ति की प्रबल संभावना होती है।

वर्ग कुंडलियों का अध्ययन जन्म कुंडली से संबंद्ध घटना विशेष के विश्लेषण के लिए किया जाता है। नीचे विशिष्ट घटनाओं के लिए उपयोग में लायी जानी वाली कुछ वर्ग कुंडलियों का उल्लेख किया गया है :

वर्ग कुंडली का नाम	अध्ययन का विषय
होरा (डी–2)	धन–संपत्ति
द्रेष्काण–(डी–3)	छोटे भाई–बहन, पराक्रम, पहलकदमी
चतुर्थांश–(डी–4)	भू–संपत्ति, वाहन, सुख–साधन
पंचमांश (डी–5)	उच्च शिक्षा
षष्ठांश (डी–6)	ऋण, रोग
सप्तमांश (डी–7)	संतान पक्ष
अष्टमांश (डी–8)	दीर्घायु
नवांश (डी–9)	ग्रह बल, विवाह की जांच के लिए
दशमांश (डी–10)	व्यवसाय
एकादशांश (डी–11)	आय, लाभ, बड़े भाई–बहन
द्वादशांश (डी–12)	माता–पिता
चतुर्विंशांश (डी–24)	ज्ञान, शिक्षा

वर्ग कुंडली बनाने की सारणी आगे के पृष्ठों पर उपलब्ध है।

राशिस्थ ग्रहों की सारणी

डी–2 (होरा सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
1^0–15^0	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र
15^0–30^0	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य	चंद्र	सूर्य

डी–3 (द्रेष्काण सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
0^0–10^0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
10^0–20^0	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
20^0–30^0	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

डी–4 (चतुर्थांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
0^0–$7^0 10^0$	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
$7^0 30'$–15^0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
15^0–$22^0 30'$	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
$22^0 30'$–30^0	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9

डी–5 (पंचमांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
6°	1	6	11	4	9	2	7	12	5	10	3	8
12°	2	7	12	5	10	3	8	1	6	11	4	9
18°	3	8	1	6	11	4	9	2	7	12	5	10
24°	4	9	2	7	12	5	10	3	8	1	6	12
30°	5	10	3	8	1	6	11	4	9	2	7	12

डी–6 (षष्ठांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
5°	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7
10°	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8
15°	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9
20°	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10
25°	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11
30°	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	9	12

डी–7 (सप्तमांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
4°17'	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7	1	7
8°34'	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8	2	8
12°51'	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9	3	9
17°8'	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10	4	10
21°25'	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11	5	11
25°42'	6	12	6	12	6	12	6	12	6	12	9	12
30°	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12

डी–8 (अष्टमांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
3°45'	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5
7°30'	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6
11°15'	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7
15°	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8
18°45'	5	1	9	5	1	9	5	1	9	5	1	9
22°30'	6	2	10	6	2	10	6	2	10	6	2	10
26°15'	7	3	11	7	3	11	7	3	11	7	3	11
30°	8	4	12	8	4	12	8	4	12	8	4	12

डी–9 (नवमांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
3°20'	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
6°40'	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10°	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6
13°20'	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16°40'	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20°	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23°20'	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26°40'	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30°	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

डी–10 (दशमांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
3°	1	10	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8
6°	2	11	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9
9°	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10
12°	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11
15°	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12
18°	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1
21°	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2
24°	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3
27°	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2	7	4
30°	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3	8	5

डी–11 (एकादशांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
2°43'	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
5°27'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
8°10'	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
10°54'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
13°38'	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
16°21'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
19°5'	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
21°49'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
24°32'	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
27°16'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
30°	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1

डी–12 (द्वादशांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
2°30'	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
5°	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1
7°30'	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
10°	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
12°30'	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
15°	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
17°30'	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
20°	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
22°30'	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
25°	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
27°30'	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
30°	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

डी–24 (चतुर्विंशांश सारणी)

रेखांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
1°15'	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4
2°30'	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5
3°45'	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6
5°0'	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7
6°15'	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8
7°30'	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9
8°45'	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10
10°	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11
11°15'	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12
12°30'	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1
13°45'	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2
15°	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3
16°15'	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4
17°30'	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5	6	5
18°45'	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6	7	6
20°	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7	8	7
21°15'	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8	9	8
22°30'	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9	10	9
23°45'	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10	11	10
25°	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11	12	11
26°15'	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12	1	12
27°30'	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1	2	1
28°45'	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2	3	2
30°	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3	4	3

पाठ 6
शैक्षिक उपलब्धियों का काल निर्णय

आधुनिक युग में शिक्षा के अनेक रूप विकसित हुए हैं। प्रस्तुत अध्याय में जातक के शैक्षिक आयाम पर प्रकाश डाला गया है। कुंडली के द्वितीय और चतुर्थ भाव स्कूली शिक्षा/व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त लोगों को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। यदि द्वितीय भाव, इसके स्वामी, चतुर्थ भाव और इसके स्वामी बली हों और जन्म कुंडली में शुभ भावों में स्थित हों, तो जातक को अच्छी शिक्षा की प्राप्ति हो सकती है। किंतु यदि ये भाव तथा भाव स्वामी निर्बल, पीड़ित और अशुभ भावस्थ हों, तो जातक को अच्छी शिक्षा नहीं मिलेगी। उच्च व्यावसायिक शिक्षा की जानकारी के लिए पंचम भाव, पंचमेश तथा शिक्षा और ज्ञान के कारक बुध का अध्ययन करना चाहिए। जातक किस स्तर तक की शिक्षा ग्रहण करेगा इसका ज्ञान जन्म कुंडली से प्राप्त होता है। किंतु, उच्च शिक्षा/व्यावसायिक शिक्षा की प्राप्ति का समय निर्धारण ग्रह दशा तथा ग्रह गोचर के द्वारा किया जा सकता है।

समय निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित नियमों का अध्ययन किया जाना चाहिए। निम्नलिखित ग्रहों की दशा में जातक उच्च शिक्षा/व्यावसायिक शिक्षा में सफलता प्राप्त कर सकता है।

दशा नियम :

1. पंचमेश की दशा
2. पंचमेश जिस राशि में स्थित है, उसके स्वामी की दशा।
3. चतुर्विंशांश के लग्न स्वामी की दशा
4. शिक्षा के कारक बुध और बुध से पंचम भाव के स्वामी की दशा
5. पंचम भाव को देख रहे, पंचमेश से युत या दृष्ट, पंचम भावस्थ ग्रह की दशा
6. बुध/चंद्र से पंचमेश और चंद्र/बुध से पंचम भाव स्थित ग्रह की दशा।

गोचर नियम :

उपर्युक्त ग्रहों की दशा के दौरान शनि तथा बृहस्पति के बीच निम्नलिखित चार में से दो स्थितियों में युति या दृष्ट संबंध स्थापित होंगे।

1. लग्न या चंद्र से पंचम भाव, पंचमेश, नवम भाव, नवमेश।

यदि ऊपर वर्णित दशा और गोचर पैरामीटर पूरे होते हैं, तो दशा पैरामीटर में वर्णित ग्रहों की दशा के दौरान जातक को उच्च शिक्षा/व्यावसायिक शिक्षा में सफलता मिलेगी।

यह कुंडली एक युवा लड़की की है, जिसने वरिष्ठ माध्यमिक परीक्षा पास करने के बाद 05.07.2002 से 02.08.2002 के बीच उच्चतर शिक्षा के लिए तीन प्रवेश परीक्षाएं पास कीं। वह दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.बी.एस., इदंप्रस्थ विश्वविद्यालय के बी.जे.एम.सी. तथा दिल्ली विश्वविद्यालय की विदेशी भाषा की डिग्री पाठ्यक्रमों में प्रवेश की जांच परीक्षाएं पास कीं।

उदाहरण–1

जन्मतिथि : 10.12.1984
जन्म समय : 12.55
जन्म स्थान : दिल्ली

लग्न कुंडली
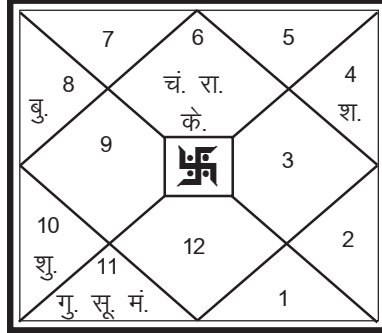
चतुर्विंशांश कुंडली
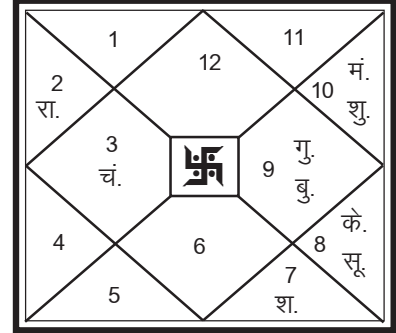
05.07.2002 से 02.08.2002 तक लड़की पर गुरु की दशा, मंगल की अंतर्दशा और चंद्र की प्रत्यंतर्दशा प्रभावी थीं। अब हम देखेंगे कि इस उदाहरण में दशा के अधीन उल्लिखित पैरामीटर कैसे लागू होता है।

दशानाथ गुरु की दृष्टि पंचम स्वामी चंद्र पर है। अंतर्दशानाथ मंगल पंचम भाव को दखे रहा है और प्रत्यंतर्दशानाथ चंद्र स्वयं पंचम स्वामी है। दशा पैरामीटर में वर्णित ग्रहों के मध्य महादशानाथ, अंतर्दशानाथ तथा प्रत्यंतर्दशानाथ विद्यमान हैं। ऊपर लिखित दशा काल में शनि मिथुन में गोचर कर रहा था, इसकी पंचम स्वामी के साथ युति थी और गुरु कर्क अर्थात् जन्म कुंडली के पंचम में गोचर कर रहा था।

कुंडली में गोचर के सभी पैरामीटर लागू होंगे। दशा और गोचर शुभ और दशा तथा गोचर सिद्धांत के अनुरूप थे। बालिका ने फ्रांसीसी भाषा के बी.ए. प्रतिष्ठा पाठ्यक्रय में नामांकन का निर्णय लिया। यहां जन्म कुंडली में केतु की भूमिका अहम् है। केतु की पंचम अर्थात् शिक्षा भाव पर दृष्टि है। केतु विदेशी भाषा का कारक है, जिसने लड़की को विदेशी भाषा पाठ्यक्रम में नामांकन के लिए प्रेरित किया, यद्यपि वह प्रशासनिक या पत्राचार पाठ्यक्रम में नामांकन करा सकती थी क्योंकि उसने उन दोनों की जाचं परीक्षाएं भी पास की थीं।

उदाहरण–2

जन्मतिथि : 07.03.1972
जन्म समय : 01.55
जन्म स्थान : बंबई

लग्न कुंडली
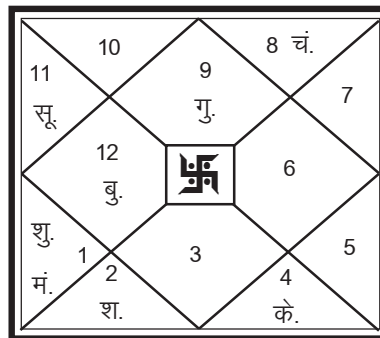
चतुर्विंशांश कुंडली
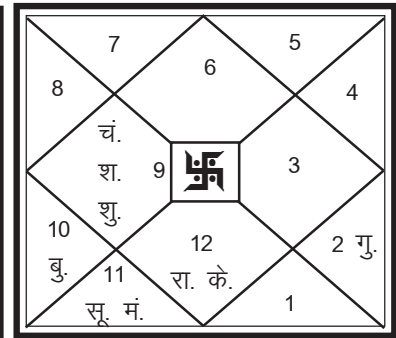
यह कुंडली एक कन्या की है जिसकी शैक्षिक योग्यता बी.ए. है। उसने एन.आइ.एफ.टी. से फैशन टेक्नॉलॉजी के पी.जी. डिप्लोमा के अप्रैल 1995 से जून 1996 सत्र के लिए प्रवेश परीक्षा पास की और उसमें नामांकन कराया। अब हम उस काल में चल रही दशा का विश्लेषण करेंगे।

कन्या पर बुध की दशा, मंगल की अंतर्दशा और शुक्र की प्रत्यंतर्दशा प्रभावी थीं। दशा बुध की है जो उच्चतर शिक्षा का कारक तथा चतुर्विंशांश का स्वामी है, अंतर्दशा पंचम भाव में स्वराशिगत पंचम स्वामी मंगल की है और प्रत्यंतर्दशा पंचम स्वामी से युत और पंचम भावस्थ शुक्र की है। यहां शुक्र अर्थात प्रत्यंतर्दशानाथ की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। कला की पृष्ठभूमि होने के बावजूद कन्या ने फैशन टेक्नॉलॉजी में प्रवेश लिया क्योंकि शुक्र फैशन का कारक है।

गोचर : ऊपर वर्णित काल में पंचम भाव और नवम स्वामी युत पंचम स्वामी को देख रहा शनि कुंभ में गोचर कर रहा था। बृहस्पति (व) वृश्चिक में गोचर कर रहा था और वक्री होने के कारण पंचम भाव और पंचम स्वामी को देख रहा था क्योंकि जिस राशि में कोई वक्री ग्रह जिस भाव में स्थित होता है उससे पूर्व के भाव पर दृष्टि डालता है। ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ऊपर वर्णित दशा और गोचर के दौरान यह सिद्धांत पूरी तरह लागू था, जिसके अनुसार जातक को उच्चतर शिक्षा की प्राप्ति होती है।

पाठ 7

व्यवसाय में उन्नति का काल निर्धारण

व्यवसाय और व्यवसाय में उन्नति का फलादेश करना ज्योतिषियों के लिए एक कठिन कार्य है। जातक के व्यवसाय क्षेत्र और व्यवसाय में उन्नति की घटनाओं के निर्धारण के कई बिंदु हैं। व्यवसाय के लिए दशम भाव अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, यद्यपि नवम और द्वितीय भावों को भी वही महत्त्व दिया जाना चाहिए, क्योंकि नवम भाग्य का और द्वितीय प्रतिष्ठा का भाव है। जातक के व्यवसाय का विश्लेषण करते समय, नवम, एकादशम और द्वितीय भावों के साथ–साथ दशम भाव का विश्लेषण करना चाहिए। दशांश व्यवसाय की संबंद्ध वर्ग कुंडली अर्थात डी–10 के लग्न स्वामी की स्थिति और बल को व्यवसाय का विश्लेषण करते समय समान महत्त्व दिया जाना चाहिए अन्यथा फलकथन भ्रामक हो जाएगा। जातक के व्यवसाय का संबंध स्थिति, युति तथा दृष्टि के द्वारा दशम भाव तथा दशम स्वामी पर प्रभावी ग्रहों के कारकत्व से होता है।

पाठकों की जानकारी के लिए विभिन्न ग्रहों के द्वारा द्योतित व्यवसायों का उल्लेख प्रस्तुत है।

सूर्य प्रशासन, सरकार तथा दवा से संबंद्ध व्यवसाय का कारक है। चंद्र आतिथ्य और जन संपर्क का द्योतक है। मंगल सेना, पुलिस और उद्यमशीलता का द्योतक है। बुध वित्त, संरचनात्मक डिजाइनिंग,लेखन तथा ज्योतिष का द्योतक है। गुरु शिक्षा, विधि व्यवसाय, परामर्श कार्य, आध्यात्मिकता से संबंधित व्यवसाय और वित्तीय व्यवस्था का द्योतक है। शुक्र टी.वी. तथा फिल्मोद्योग, जीवन रक्षक दवाओं, वित्तीय सलाहकार के कार्य, संगीत, विलासिता सामग्री के व्यवसाय आदि का द्योतक है। शनि उद्योग, सेवा, श्रम संबंधी कार्य तथा नेतृत्व का द्योतक है।

जन्म कुंडली जातक के केवल व्यवसाय के क्षेत्र का संकेत देता है, घटनाओं के काल निर्धारण का ज्ञान अवधि विशेष के दौरान चल रही ग्रहों की दशा के अध्ययन से प्राप्त होता है।

व्यवसाय में उन्नति के काल निर्णय के लिए निम्नलिखित पैरामीटरों की गणना की जानी चाहिए।

निम्नलिखित ग्रहों की दशा व्यवसाय संबंधी घटनाओं और व्यवसाय में उन्नति की द्योतक है। जिन ग्रहों की दशा चल रही हो, फल उनके कारकत्व के अनुरूप होते हैं।

दशा पैरामीटर

1. जन्म कुंडली के दशमांश की दशा
2. दशमेश जिस राशि में स्थित हो उस राशि स्वामी की दशा
3. दशमांश के लग्न स्वामी की दशा
4. दशम भाव और दशम स्वामी को देख रहे ग्रहों, दशमश से युत ग्रहों और दशम भावस्थ ग्रहों और दशमेश को देख रहे या उससे युत ग्रहों की दशा।
5. सप्तमेश की दशा, क्योंकि दशम भाव से दशम होने के कारण यह व्यवसाय का वैकल्पिक भाव है।

गोचर पैरामीटर :

ऊपर वर्णित पैरामीटरों से संबंद्ध ग्रहों की दशा के दौरान शनि तथा गुरु का निम्नलिखित चार में से दो स्थितियों में युति या दृष्टि संबंध अवश्य होना चाहिए :

1. दशम भाव, 2. दशमेश, 3. सप्तम भाव, 4. लग्न या चंद्र से सप्तमेश।

यदि दशा और गोचर अनुकूल हैं, तो जातक को व्यवसाय में सफलता मिलेगी और उन्नति होगी। फल, जन्म तथा वर्ग कुंडलियों में ग्रहों के बल के अनुरूप होंगे। यदि ग्रह बली हैं तो शुभ फल देगा और यदि निर्बल या पीड़ित है तो अशुभ फल देगा।

उदाहरण–1

जन्मतिथि : 19.10.1952
जन्म समय : 15.15
जन्म स्थान : नजीबाबाद
देश : भारत

लग्न कुंडली
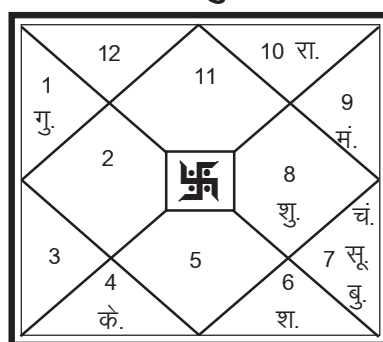
दशमांश कुंडली
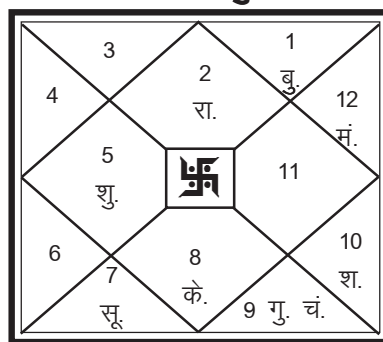
उपर्युक्त जन्मकुंडली एक सरकारी कर्मचारी की है, जिसे 31.5.1973 को निम्नवर्गीय लिपिक की सरकारी नौकरी मिली और आगे चलकर उसकी पदोन्नति लेखा पदाधिकारी के पद पर हुई। जातक की 31.05. 1973 को नियुक्ति हुई और 21.01.1978 को विभागीय परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद 26.11.1979 को उसकी पदोन्नति लेखा पदाधिकारी के पद पर हो गयी। निम्नलिखित सारणी में नियुक्ति और पदोन्नति के समय चल रही दशा और शनि के गोचर तथा घटना की तिथि को चल रहे गोचर का उल्लेख है:

घटना की तिथि	चालू दशा	शनि गोचर	गुरु
31.05.1973	गुरु/शनि/गुरु	वृष	मकर (व)
26.11.1979	गुरु/शनि/बुध	कन्या	सिंह
21.01.1987	शनि/शनि/राहु	वृश्चिक	कुंभ

सरकारी विभाग में जातक की नियुक्ति के दिन उस पर दशम स्वामी मंगल के ग्रहाक्रांत राशीश गुरु की दशा, तृतीय दृष्टि से दशम भाव की देख रहे शनि की अंतर्दशा और मंगल के ग्रहाक्रांत राशीश गुरु की अंतर्दशा चल रही थी।

उच्चवर्गीय लिपिक के पद पर प्रोन्नति के दिन जातक पर गुरु की दशा और सप्तम भाव स्वामी सूर्य की अंतर्दशा प्रभावी थी। दशम से दशम होने के कारण सप्तम भाव व्यवसाय का वैकल्पिक भाव है। सूर्य दशम भाव का कारक है। उस समय सप्तम भाव स्वामी सूर्य से युत बुध की अंतर्दशा भी चल रही थी। जिस समय जातक की प्रोन्नति सीधे दूसरे दर्जे के पद पर हुई उस समय उस पर दशम भाव को देख रहे शनि की दशा चल रही थी, जो लग्नेश भी है। साथ ही, उस पर चल रही अंतर्दशा भी शनि की ही

थी जबकि प्रत्यंतर्दशा राहु की थी जिसका ग्रहाक्रांत राशीश शनि दशम भाव को देख रहा था।

तीनों ही घटनाओं में ग्रहों की दशाएं ऊपर वर्णित दशा पैरामीटर से संबद्ध हैं। अब हम गोचर के अंतर्गत निम्नलिखित सिद्धांतों का विश्लेषण करेंगे।

31.05.1973 को शनि मेष में गोचर कर रहा था जो जन्म कुंडली के दशम भाव में स्थित था और वक्री गुरु मकर में गोचर कर रहा था जहां से उसकी दृष्टि व्यवसाय के वैकल्पिक भाव सप्तम पर पड़ रही थी। 26.11.1979 को शनि कन्या में गोचर कर रहा था और जन्म कुंडली के दशम भाव पर इसकी दृष्टि थी जबकि गुरु सिंह में गोचर कर रहा था जो सप्तम अर्थात् व्यवसाय का वैकल्पिक भाव है।

21.01.1978 को शनि वृश्चिक अर्थात् जन्म कुंडली के दशम भाव में गोचर कर रहा था और गुरु कुंभ में गोचर कर रहा था जहां से इसकी दृष्टि जन्म कुंडली के सप्तम भाव पर पड़ रही थी जो व्यवसाय का वैकल्पिक भाव है।

इस तरह, शनि तथा गुरु का गोचर वर्णित सिद्धांतों के अनुकूल था।

उदाहरण– कुंडली–2

जन्मतिथि : 29.11.1977
जन्म समय : 05.01
जन्म स्थान : कोलकाता
देश : भारत

लग्न कुंडली

5 श.
6 रा.
4 मं.
7 शु.
गु. चं.
8 सू.
2
9 बु.
11
1
10
12 के.

दशमांश कुंडली
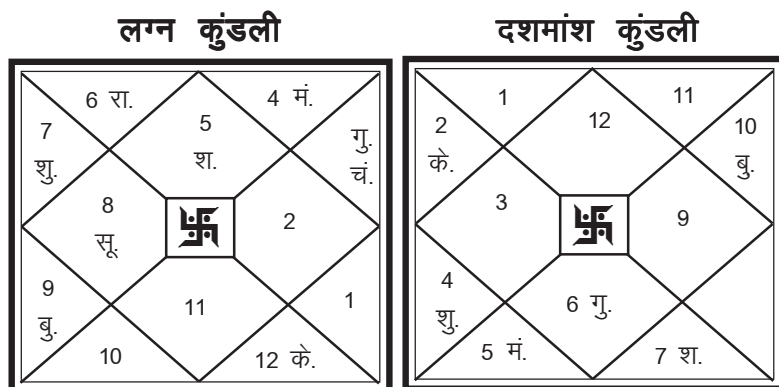
उपर्युक्त जन्म कुंडली एक युवती की है, जिसका दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स के कैम्पस प्लेसमेंट के जरिये आइ.एफ.सी. आइ. के लिए चयन किया गया और उसकी 03.07.2000 को पदाधिकारी के पद पर सीधी नियुक्ति हुई।

नियुक्ति के दिन जातक पर शनि/शनि/शुक्र की दशा चल रही थी। दशा स्वामी के रूप में शनि की दृष्टि जातक के दशम भाव पर है। शनि अंतर्दशानाथ भी है और इसके बारे में और कुछ कहने की जरूरत नहीं है। शुक्र की प्रत्यंतर्दशा थी जो जन्म कुंडली के दशम भाव का स्वामी है। इस प्रकार, सभी ग्रह दशा पैरामीटर में वर्णित पैरामीटरों के अनुरूप हैं।

अब हम शनि और गुरु के गोचर का विश्लेषण करेंगे।

30.07.2000 को शनि मेष अर्थात् जन्म कुंडली के दशम भाव में और गुरु भी उसी भाव में गोचर कर रहा था। शनि और गुरु का गोचर भी गोचर के सिद्धांतों के अनुकूल है।

पाठ 8

विवाह का काल–निर्धारण

विवाह एक संस्कार है, मानव जीवन की निरंतरता बनाए रखने में जिसकी भूमिका अहम होती है। विवाह दो युवक/युवती के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। जैसा कि भावों के कारकत्व के अध्याय में पहले ही बताया जा चुका है, जन्मकुंडली का सप्तम भाव विवाह का द्योतक है। शुक्र विवाह का कारक है। सप्तम भाव, सप्तमेश और विवाह तथा जीवन के नैसर्गिक कारक शुक्र की शुभ स्थिति के फलस्वरूप जातक का दांपत्य जीवन सुखी होता है। जन्म कुंडली में नीच राशिस्थ/अस्तंगत होने के कारण यदि सप्तम भाव, सप्तमेश और शुक्र निर्बल या पीड़ित हों, षष्ठम, अष्टम या द्वादशम भाव में अशुभस्थ हों, नवांश में नीचस्थ हों, अशुभ ग्रहों से युत या दृष्टि होने के कारण पीड़ित हों, तो वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है और यदि सप्तम भाव, सप्तम स्वामी, शुक्र तथा शुक्र से सप्तम भाव अत्यंत पीड़ित हों, तो विवाह नहीं होता।

इसलिए, हमें पहले यह देखना चाहिए कि जन्म कुंडली क्या संकेत देती है। हमें यह भी देखना चाहिए कि विवाह की स्थिति क्या है–शीघ्र होगा, सुखपूर्ण होगा, विलंब से होगा, कलहपूर्ण होगा या नहीं होगा।

जन्मकुंडली में संभावनाओं के अध्ययन के बाद अगला प्रश्न उठता है कि विवाह कब होगा। विवाह का समय साधारणतया सप्तम स्वामी के स्वभाव पर निर्भर करता है। यदि बुध सप्तम स्वामी हो, तो विवाह शीघ्र अर्थात् 18 से 20 वर्ष के बीच की आयु में, मंगल सप्तम स्वामी हो, तो 20 से 21 वर्ष की आयु में, यदि शुक्र सप्तम स्वामी हो, तो 20 से 22 वर्ष की आयु में, यदि चंद्र सप्तम स्वामी हो, तो 22–23 वर्ष की आयु में, यदि गुरु सप्तम स्वामी हो तो 24 वर्ष की आयु में, सूर्य हो, तो 26 वर्ष में और यदि शनि हो, तो 28 वर्ष में होगा। आयु के ये विभिन्न वर्ग ग्रहों की नैसर्गिक आयु निर्भर करते हैं।

लोग अक्सर पूछा करते हैं कि उनके जीवनसाथी का स्वभाव कैसा होगा। इस प्रश्न का उत्तर आसानी से दिया जा सकता है। हमें यह देखना चाहिए कि जातक के सप्तम भाव में कौन सी राशि है।

यदि सप्तम भाव में मेष, सिंह या धनु है, तो जीवनसाथी उग्र, हठी, साहसी, अधीर तथा नेतृत्व गुण से संपन्न होगा/होगी।

यदि सप्तम भाव में वृष, कन्या या मकर हो, तो जीवनसाथी विलासी, या विषयी हो सकता/सकती है।

यदि उक्त भाव में मिथुन, तुला या कुंभ हो, तो जीवनसाथी खुले स्वभाव का, महत्त्वाकांक्षी, कूटनीतिज्ञ और कार्यकुशल होगा/होगी

यदि उसी भाव में कर्क, वृश्चिक या मीन राशि हो, तो जीवनसाथी चंचल स्वभाव, शांतिप्रिय तथा तुनुक मिजाज होगा/होगी।

कुंडली से शीघ्र विवाह, सुखमय वैवाहिक जीवन, विलंब से विवाह, कलहपूर्ण वैवाहिक जीवन या विवाह न होना आदि का ज्ञान प्राप्त होता है, किंतु विवाह का काल निर्धारण समय विशेष पर चल रही ग्रह दशा और गोचर के आधार पर किया जाता है।

विवाह के काल–निर्धारण के लिए निम्नलिखित पैरामीटरों मूल्यांकन किया जाना चाहिए। विवाह के लिए निम्नलिखित ग्रहों की दशाएं उपयुक्त हैं।

दशा पैरामीटर

1. सप्तमेश की दशा
2. सप्तम भाव से सप्तम लग्नेश की दशा।
3. नवांश कुंडली के लग्नेश की दशा।
4. सप्तमेश जिस राशि में स्थित हो उसके स्वामी की दशा।
5. विवाह के नैसर्गिक ग्रह शुक्र या राहु की दशा।
6. सप्तम भाव स्थित और सप्तमेश से युत और दृष्ट ग्रहों की दशा।
7. चंद्र या शुक्र से सप्तम भाव स्थित ग्रहों और चंद्र या शुक्र से सप्तम स्वामी की दशा।

ऊपर वर्णित ग्रहों की दशा के दौरान शनि तथा गुरु का निम्न में से किन्हीं दो स्थितियों में संपर्क स्थापित होगा।

लग्न या चंद्र से सप्तम भाव, सप्तम स्वामी, लग्न, लग्न स्वामी।

यदि दशा पैरामीटर और गोचर पैरामीटर अनुकूल हों और ऊपर वर्णित पैरामीटरों के अंतर्गत आते हों, तो विवाह उस काल में होगा।

नीचे कुंडली 1 के जातक वर का विवाह 06.02.2003 को तय था। अब हम 06.02.2003 को प्रभावी दशा का विश्लेषण करें। उक्त तिथि को वर पर राहु की दशा, बुध की अंतर्दशा तथा गुरु की प्रत्यंतर्दशा प्रभावी थी। राहु विवाह का नैसर्गिक ग्रह, अंतर्दशा स्वामी बुध लग्नेश, सप्तम भाव से सप्तम भाव स्वामी तथा प्रत्यंतर्दशा नाथ शुक्र विवाह का नैसर्गिक कारक है। सभी तीनों ग्रह दशा पैरामीटर के अंतर्गत निर्धारित पैरामीटरों से संबद्ध हैं।

06.02.2003 को गोचर : शनि मिथुन (व) में गोचर कर रहा था और कुंडली के सप्तम भाव पर उसकी दृष्टि थी। गुरु कर्क (व) में गोचर कर रहा था और इसकी दृष्टि भी जन्म कुंडली के भाव सप्तम पर थी। इस प्रकार गोचर पैरामीटर भी गोचर के सिद्धान्तों के अनुकूल था।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 21.04.1976
जन्म समय : 17.30
जन्म स्थान : चंडीगढ़
देश : भारत

लग्न कुंडली

नवमांश कुंडली
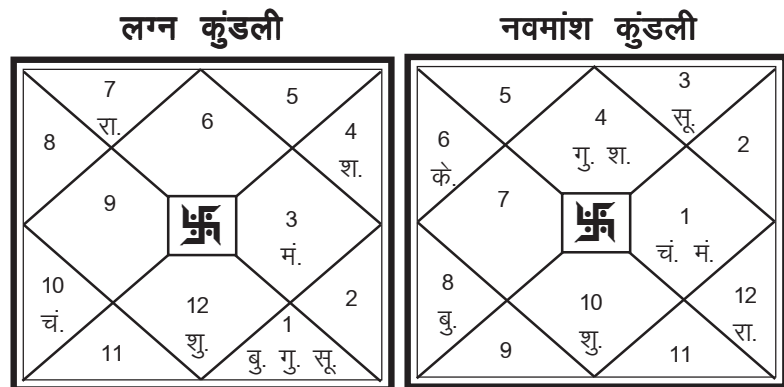
कुंडली 2 उस कन्या की है जिसका विवाह उपर्युक्त वर के साथ स्थिर है। अब, हम 06:02:2003 को कन्या पर प्रभावी दशा का विश्लेषण करेंगे। उस पर शनि–बुध–शुक्र की दशा प्रभावी थी। शनि की दृष्टि कुंडली के सप्तम भाव पर थी। बुध चंद्र से सप्तम भाव में स्थित था और शुक्र विवाह का नैसर्गिक कारक है। इस प्रकार ग्रह दशा पैरामीटर के सिद्धान्तों के अनुकूल थी।

गोचर : शनि (व) मिथुन में गोचर कर रहा था और जन्म कुंडली के सप्तम भाव पर उसकी दृष्टि थी। गुरु कर्क (व) में गोचर कर रहा था– वक्री ग्रहों की दृष्टि पिछले भाव पर भी होती है। गोचर पैरामीटर भी अनुकूल हैं।

उदाहरण कुंडली–2

जन्मतिथि : 29.11.1977
जन्म समय : 00.01
जन्म स्थान : कलकत्ता
देश : भारत

लग्न कुंडली

नवमांश कुंडली
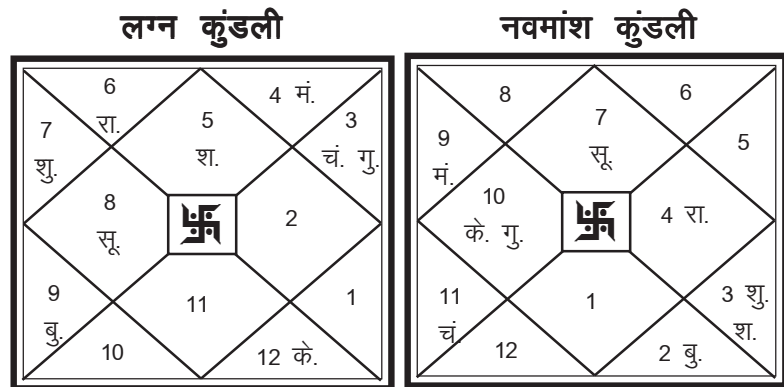
कुंडली 3 के जातक का विवाह 28.06.1975 को हुआ। जातक पर गुरु–गुरु–शुक्र की दशा प्रभावी थी। लग्नेश शुक्र पर दशानाथ गुरु की दृष्टि है। गुरु ही अंतर्दशानाथ भी है जबकि शुक्र प्रत्यंतर्दशानाथ, लग्नेश और विवाह का नैसर्गिक ग्रह है।

गोचर : विवाह के दिन शनि मिथुन में गोचर कर रहा था और लग्नस्वामी शुक्र पर उसकी दशम दृष्टि थी। गुरु मीन में गोचर कर रहा था और सप्तम से सप्तम भाव लग्न पर उसकी दृष्टि थी। इस प्रकार शनि और गुरु गोचर पैरामीटर के अनुकूल थे।

उदाहरण– कुंडली–3

जन्मतिथि : 22.08.1975
जन्म समय : 11.20
जन्म स्थान : कपूरथला
देश : भारत

लग्न कुंडली

नवमांश कुंडली
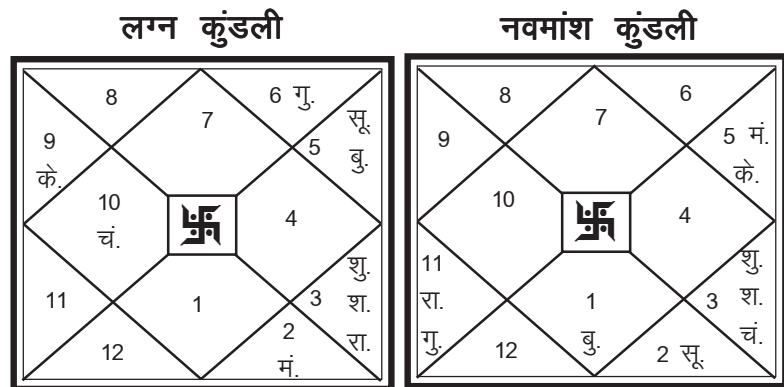
पाठ 9

शिशु जन्म का काल निर्णय

हिंदू शास्त्रों के अनुसार पुत्र वह है, जो माता–पिता की नर्क से रक्षा करे। पंचम भाव को साधारणतया संतान तथा शिक्षा का सूचक माना जाता है। पंचम भाव से मुख्यतः संतान पक्ष का ज्ञान प्राप्त किया जाता है और इस भाव पर आधारित अधिकांश ज्योतिषीय फलादेश जातक के संतान पक्ष से संबंद्ध होता है। नवम भाव संतान का वैकल्पिक भाव है जो पंचम भाव से पंचम है। वर्ग कुंडली सप्तमांश है जिससे संतान पक्ष के विषय में अधिक जानकारी मिलती है। इसे राशि कुंडली का विश्लेषण करते समय सप्तमांश के लग्न और लग्न स्वामी तथा संबद्ध भाव अर्थात् पंचम भाव और सप्तमांश में इसके स्वामी पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

जन्म कुंडली और वर्ग कुंडली अर्थात् सप्तमांश द्वारा आश्चर्यजनक फलादेश किया जा सकता है।

मान लें कि राशि कुंडली में पंचम स्वामी अष्टम भाव में है और सप्तमांश का पंचम स्वामी भी सप्तमांश के अष्टम भाव में है। यह स्थिति संतान सुख के क्षीण होने का संकेत देती है।

ज्योतिष में, बृहस्पति को संतान का, विशेषकर पुरुष संतान का, कारक कहा जाता है। संतान से संबद्ध विषय का विश्लेषण करते समय पंचमेश के अतिरिक्त बृहस्पति पर भी समान रूप से ध्यान जाना चाहिए।

संतानोत्पत्ति के पूर्व लोग यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि उनके बेटा होगा या बेटी और लड़के अधिक होंगे या लड़कियां। नीचे कुछ ज्योतिषीय योगों का उल्लेख किया जा रहा है जिनके आधार पर लड़कों या लड़कियों की संख्या का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

1. यदि पंचम स्वामी स्त्री राशि, स्त्री नवांश और स्त्री नक्षत्र में हो तो लड़कियों की संख्या अधिक हो सकती है।
2. यदि उक्त स्थिति पुरुष राशि, पुरुष नवांश और पुरुष नक्षत्र के साथ हो तो लड़कों की संख्या लड़कियों की संख्या से अधिक होगी।
3. यदि पंचम भाव द्विस्वभाव राशि और द्विस्वभाव नवांश में हो, तो जुड़वां बच्चों की उत्पत्ति हो सकती है।
4. यदि लग्न से पहले छः भावों में से किसी एक पर पंचम स्वामी का आधिपत्य हो, तो शीघ्र संतानोत्पत्ति की संभावना रहती है और यदि उसी पंचम स्वामी का आधिपत्य सप्तम अथवा द्वादशम भाव पर हो, तो संतानों की संख्या कम होगी।

कुछ ऐसे ज्योतिषीय योग भी हैं जो संतानहीनता का संकेत देते हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1. पंचम भाव पर मंगल अथवा कन्या का प्रभाव हो और उसमें राहु स्थित हो।
2. राहु की पंचमेश के साथ युति हो।
3. पंचम भाव स्थित राहु पर मंगल की दृष्टि हो।
4. राहु लग्न में और मंगल तथा बृहस्पति पंचम भाव में स्थित हों।

5. पंचम भाव में राहु की बुध के साथ युति हो।
6. मंगल द्वितीय तथा शनि तृतीय भाव में स्थित हो।

नीचे संतान से संबंधित पंचम भाव पर विभिन्न ग्रहों के प्रभावों का वर्णन किया जा रहा है।

सूर्य शिशु का कष्टप्रद जन्म। शुभ दृष्ट सूर्य संतान से लाभ का संकेत देता है।

चंद्र विख्यात अथवा कुख्यात संतान। अष्टम अथवा द्वादशम भाव से पीड़ित चंद्र संतानों की मृत्यु का संकेत देता है।

बुध माता–पिता संतानों के प्रति चिंतित रहते हैं।

मंगल कष्टकर संतानोत्पत्ति। यदि मंगल बृहस्पति या शुक्र से पीड़ित हो, तो संतानों का नाश होता है।

बृहस्पति आज्ञाकारी तथा कर्त्तव्य परायण संतान।

शुक्र कलाप्रिय अथवा संगीतप्रिय संतान।

शनि संतानोत्पत्ति में विलंब। शनि यदि मंगल या शुक्र से पीड़ित हो, तो संतानों की मात–पिता के साथ सहानुभूति नहीं होगी।

पंचम भाव तथा पंचमेश की ज्योतिषीय गणना : बृहस्पति और बृहस्पति से पंचम भाव शुभ–अशुभ संतानों के जन्म का संकेत देते हैं, किंतु बच्चों के जन्म के समय का ज्ञान ग्रहों के गोचर के किसी समय विशेष में चल रही ग्रहों की दशा के आधार पर प्राप्त किया जाता है।

संतानोत्पत्ति के काल निर्धारण के लिए चालू दशा का विश्लेषण किया जाना चाहिए। संतानोत्पत्ति निम्नलिखित ग्रहों की दशा के दौरान होगी :

1. पंचमेश की`दशा
2. पंचमेश का ग्रहाक्रांत राशीश
3. सप्तमांश के लग्नेश की दशा
4. नैसर्गिक कारक बृहस्पति की दशा
5. बृहस्पति/चंद्र से पंचम स्वामी, चंद्र या बृहस्पति से पंचम भाव स्थित ग्रह की दशा
6. पंचमेश के ग्रहाक्रांत राशीश की दशा।
7. पंचम भाव स्थित और पंचमेश तथा पंचमेश को देख रहे ग्रहों से युत ग्रहों की दशा।

गोचर पैरामीटर

ऊपर वर्णित पैरामीटर से संबद्ध ग्रहों की दशा के दौरान शनि और बृहस्पति का निम्नलिखित चार में से किन्हीं दो स्थितियों में दृष्टि या युति संबंध होना चाहिए।

1. पंचम भाव, 2. पंचमेश 3. नवम भाव, 4. लग्न या चंद्र से नवमेश

यदि दशम तथा गोचर पैरामीटर ऊपर वर्णित पैरामीटर के अनुरूप हों, तो संतानोत्पत्ति उस दशा विशेष के दौरान होगी।

ऊपर उल्लिखित सिद्धांत उपयुक्त हैं या नहीं यह देखने के लिए नीचे कुछ अलग–अलग कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है :

कुंडली 1 के जातक के तीन बच्चे हैं– दो बेटियां और एक बेटा। बच्चों की जन्मतिथियों, जन्म के समय प्रभावी दशा और शनि तथा बृहस्पति के गोचर का वर्णन इस प्रकार है :

शिशु का जन्म दिन	**प्रभावी दशा**	**शनि/गुरु का गोचर**
10.12.1984	शनि/शनि/शनि	तुला में शनि का और धन में गुरु का
31.08.1986	शनि/शनि/चंद्र	वृश्चिक में शनि का और कुंभ में गुरु का
30.11.1988	शनि/बुध/चंद्र	शनि का धनु में और गुरु का वृष (व) में

पहली संतान : शनि चंद्र से पंचमेश है, अंतर्दशा नाथ और प्रत्यंतर्दशानाथ भी शनि ही है।

दूसरी संतान : चंद्र से पंचमेश शनि महादशानाथ और अंतर्दशानाथ है और प्रत्यंतर्दशानाथ चंद्र है जो लग्न से पंचम स्वामी अर्थात बुध से युत है।

तीसरी संतान : चंद्र में पंचम स्वामी शनि महादशानाथ है, लग्न से पंचमेश बुध अंतर्दशानाथ है और चंद्र प्रत्यंतर्दशानाथ है जो लग्न से पंचमेश से युत है।

ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि दशानाथ, अंतर्दशानाथ और प्रत्यंतर्दशानाथ दशा पैरामीटर्स में वर्णित ग्रहों से संबद्ध हैं।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 19.10.1952
जन्म समय : 15.15
जन्म स्थान : नजीबाबाद
देश : भारत

लग्न कुंडली

सप्तमांश कुंडली
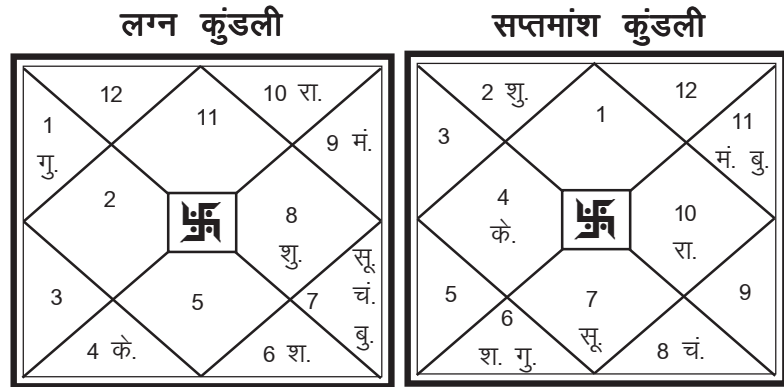
कुंडली 2 के जातक को 31:05:1986 को एक बेटी हुई। उस समय जातक पर बृहस्पति की दशा और शनि की प्रत्यंतर्दशा प्रभावी थी। बृहस्पति लग्न से पंचमेश और संतान का नैसर्गिक कारक है। शनि नैसर्गिक कारक से पंचमेश है। शनि प्रत्यंतर्दशानाथ भी है और बृहस्पति से पंचमेश है। दशा पैरामीटर अनुकूल है।

गोचर : शनि 31:05:1986 को वृश्चिक (व) में गोचर कर रहा था और वहां से इसकी दृष्टि लग्न से पंचम भाव पर पड़ रही थी। बृहस्पति कुंभ में गोचर कर रहा था और वहां से इसकी दृष्टि चंद्र से पंचमेश पर पड़ रही थी। इस तरह गोचर पैरामीटर भी अनुकूल था।

उदाहरण– कुंडली–2

जन्मतिथि : 04.10.1957
जन्म समय : 04.15
जन्म स्थान : दिल्ली
देश : भारत

लग्न कुंडली

सप्तमांश कुंडली
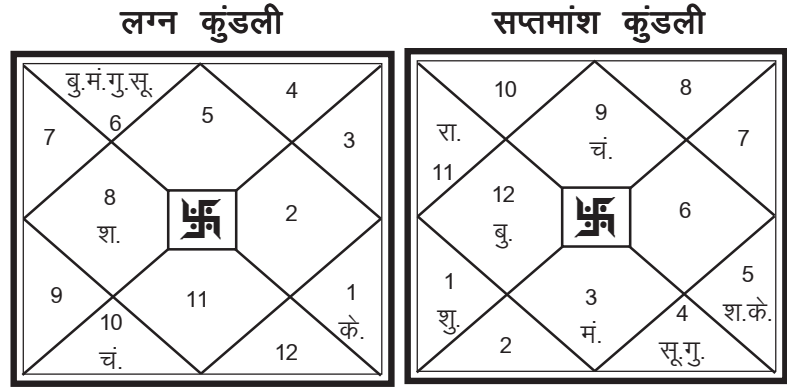
कुडली 3 के जातक को 29.08.1977 को इस कुंडली के जातक की एक बेटी का जन्म हुआ। उस समय जातक पर बृहस्पति की महादशा, शनि की अंतर्दशा तथा चंद्र की प्रत्यंतर्दशा प्रभावी थी। बृहस्पति संतान का नैसर्गिक कारक है, शनि लग्न से पंचमेश है और चंद्र बृहस्पति से पंचम भाव में स्थित है।

गोचर : कन्या के जन्म के दिन शनि सिंह में गोचर कर रहा था और पंचम भाव पर उसकी दृष्टि थी, जबकि लग्न से पंचम स्वामी से युत बृहस्पति मिथुन (व) में गोचर कर रहा था। इस तरह शनि/बृहस्पति का गोचर गोचर के सिद्धांतों के अनुकूल था।

उदाहरण– कुंडली–3

जन्मतिथि : 22.08.1945
जन्म समय : 11.20
जन्म स्थान : कपूरथला
देश : भारत

लग्न कुंडली

सप्तमांश कुंडली
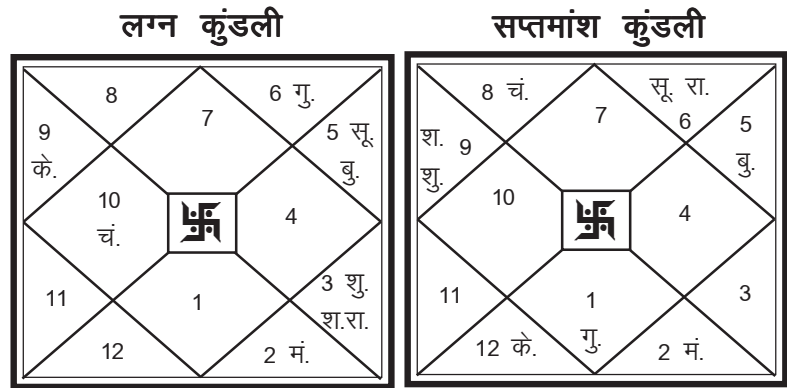
पाठ 10
विदेश यात्रा का काल निर्धारण

व्यापार/शिक्षा के वैश्वीकरण के फलस्वरूप तथा यातायात के तीव्रगामी साधनों के कारण विश्व के किसी भी देश की यात्रा दो दिनों के अंदर की जा सकती है। शिक्षा, व्यापार, देशाटन, विवाह, कूटनीतिक कार्यों आदि के मद्देनज़र विदेश यात्रा के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी है।

सप्तम, अष्टम, नवम तथा द्वादशम भाव का संबंध विदेश यात्रा से है। राहु विदेश यात्रा का कारक है। विदेश यात्रा के उद्देश्य का निर्धारण भावेश के द्वादश भाव अथवा द्वादशेश के साथ युति/दृष्टि संबंध के आधार पर किया जा सकता है। यदि पंचमेश का संबंध द्वादश भाव और द्वादशेश के साथ हो, तो यह स्थिति शिक्षा के लिए विदेश यात्रा का द्योतक है। पंचमेश का दशम भाव के साथ व्यवसाय का और सप्तम के साथ संबंध विवाह का द्योतक है। यदि यह संबंध चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से हो, तो विदेश प्रवास का सूचक है। यदि नवम भाव या नवमेश का संबंध द्वादशम भाव या द्वादशेश से हो तो विदेश यात्रा सेमिनार में भाग लेने या तीर्थाटन के लिए होगी।

राहु यदि द्वादशम, नवम, अष्टम या सप्तम भाव में स्थित हो, तो विदेश यात्रा के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। यह अपनी दशा या अंतर्दशा के दौरान विदेश यात्रा का संकेत देता है। चतुर्थ भाव भी विदेश यात्रा/विदेश प्रवास का भाव है, क्योंकि यह जातक के आवास तथा मातृभूमि का कारक है। यदि चतुर्थ भाव और चतुर्थेश की द्वादशम भाव और द्वादशेश से युति हो, तो यह स्थिति विदेश प्रवास का सूचक है। यदि चतुर्थेश द्वादशम भाव में किसी चर राशि में स्थित हो, तो यह स्थिति विदेश प्रवास का सूचक है। यदि चतुर्थेश द्वादशम भाव में किसी चर राशि में स्थित हो, तो विदेश यात्रा और वहां अल्प प्रवास का संकेत देता है। किंतु यदि चतुर्थेश द्वादशम भाव में किसी स्थिर राशि में स्थित हो, तो यह विदेश में स्थायी प्रवास का सूचक है।

नीचे कुछ ज्योतिषीय योगों का उल्लेख किया जा रहा है, जो विदेश में स्थायी प्रवास का संकेत देते हैं।

1. लग्न से चतुर्थ भाव/चतुर्थेश की अवस्थिति और दृष्टि के कारण, या यदि चतुर्थ भाव किन्हीं दो नैसर्गिक ग्रहों से घिरा हो, तो अशुभ ग्रहों से पीड़ित होते हैं।
2. चंद्र से चतुर्थ भाव/चतुर्थेश भी पूर्वोक्त स्थिति में होने पर पीड़ित होते हैं।
3. पादलग्न से चतुर्थ भाव/चतुर्थेश भी पूर्वोक्त स्थिति में हों, तो पीड़ित होते हैं।
4. नवांश का चतुर्थ भाव/चतुर्थेश भी अशुभ ग्रहों से पीड़ित होते हैं।

यदि किसी जातक की जन्म कुंडली में ऊपर वर्णित योग विद्यमान हों, तो उसका विदेश में स्थायी प्रवास हो सकता है।

यहां पादलग्न का विश्लेषण कैसे किया जाना चाहिए इसका उल्लेख आवश्यक है। देखें कि लग्न से लग्न

स्वामी कहां स्थित है, लग्नस्वामी द्वारा जिस भाव का गोचर हुआ हो उसकी दूरी की गणना करें। इसके बाद उसी दूरी की गणना से लग्नस्वामी द्वारा जिस भाव का गोचर हुआ हो उसकी दूरी की गणना करें। इसके बाद उसी दूरी की गणना लग्नस्वामी जहां स्थित हो उस स्थान से करें। इस तरह जो भाव आएगा वह पादलग्न का भाव होगा और उस भाव का स्वामी पादलग्न का स्वामी होगा।

उपपाद की गणना कैसे करें

देखें कि द्वादशम भाव से द्वादशेश कहां स्थित है। तदनंतर द्वादशेश के स्थान से दूरी की गणना करें। इस प्रकार जो भाव आएगा वह उपपाद का भाव होगा और उस भाव का स्वामी उपपाद का स्वामी होगा।

किसी कुंडली में विदेश यात्रा की संभावना का पता लगाने के बाद अगला प्रश्न उठता है कि विदेश यात्रा कब होगी। विदेश यात्रा निम्नलिखित ग्रहों की दशा के दौरान हो सकती है।

दशा पैरामीटर :

1. लग्न या चंद्र से द्वादशेश की दशा
2. द्वादशेश के ग्रहाक्रांत राशीश की दशा
3. उपपाद भाव के स्वामी की दशा
4. पंचम, सप्तम, नवम और दशम स्वामियों की दशा, यदि इन स्वामियों की द्वादशम भाव या द्वादशेश से युति हो।
5. द्वादशम भाव स्थित और द्वादशेश से युत या दृष्ट ग्रहों की दशा
6. चंद्र या उपपाद से द्वादशम भाव स्थित ग्रहों की दशा

विदेशों में स्थायी आवास का काल निर्धारण चतुर्थेश अथवा चतुर्थ भाव में स्थित ग्रहों की दशा से होता है जिनका संबंध द्वादशम भाव अथवा द्वादशेश से हो।

गोचर – पैरामीटर

ऊपर वर्णित ग्रहों की दशा के दौरान शनि और बृहस्पति का आपस में निम्नलिखित किन्हीं दो स्थितियों में संबंध अवश्य होना चाहिए।

1. द्वादशम भाव, 2. द्वादशेश, 3. उपपाद, 4. उपपाद से द्वादशम भाव या द्वादशेश,
5. चंद्र से द्वादशम भाव या द्वादशेश।

ऊपर वर्णित स्थिति के अनुसार यदि दशा और गोचर अनुकूल हों, तो जातक की विदेश यात्रा होगी। यहां दशा तथा गोचर पैरामीटरों की उपयुक्तता की जांच के लिए कुछ उदाहरण कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

मेरी जानकारी के अनुसार कुंडली 1 का जातक दो बार विदेश यात्रा पर गया। पहली यात्रा 01.09.2001 को हुई जब वह ज्योतिषीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए मारीशस गया। दूसरी यात्रा 03.09.2002 को हुई जब वह सैर के लिए अमेरिका गया।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 13.12.1956
जन्म समय : 23.10
जन्म स्थान : दिल्ली
देश : भारत

लग्न कुंडली
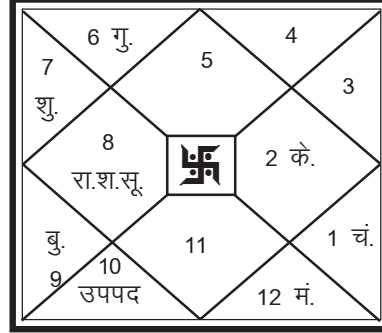
3.09.2002 को जातक पर मंगल/शुक्र/शनि की दशा प्रभावी थी। महादशानाथ मंगल द्वादशेश का ग्रहाक्रांत राशीश है, अंतर्दशानाथ शुक्र पर द्वादशेश की दृष्टि है और प्रत्यंतर्दशानाथ शनि की राहु के साथ युति है जो विदेश यात्रा का कारक है। चंद्र से द्वादशम मिथुन पर शनि का और लग्न से द्वादशम कर्क पर बृहस्पति का गोचर चल रहा था। इस प्रकार ग्रहों की दशा तथा शनि और बृहस्पति का गोचर दशा तथा गोचर पैरामीटरों के अनुकूल हैं।

01.09.2001 को जातक पर मंगल/केतु/शनि की दशा प्रभावी थी। मंगल द्वादशेश का ग्रहाक्रांत राशीश है, केतु की उपपाद स्वामी शनि पर दृष्टि है। अंतर्दशानाथ की विदेश यात्रा के कारक राहु के साथ युति है। उस समय वृष पर शनि का तथा मिथुन पर बृहस्पति का गोचर चल रहा था। इस प्रकार यात्रा के लिए दशा और गोचर पैरामीटर भी पूर्णतः उपयुक्त हैं।

कुंडली 2 एक स्त्री की है जो उदाहरण कुंडली 1 के जातक की पत्नी है और उसने अपने पति के साथ उक्त तिथियों को उक्त देशों की यात्रा की। 01.09.2001 को इस स्त्री जातक पर शुक्र/बृहस्पति/शुक्र की दशा प्रभावी थी।

दशानाथ शुक्र लग्न से द्वादशम भाव में स्थित है, अंतर्दशानाथ बृहस्पति लग्न से द्वादशेश है और प्रत्यंतर्दशानाथ शुक्र लग्न से द्वादश भाव में स्थित है। शनि का उपपद भाव वृष पर और बृहस्पति का मिथुन पर गोचर चल रहा था। बृहस्पति की उपपद से द्वादशेश पर दृष्टि थी।

उदाहरण– कुंडली–2

जन्मतिथि : 5.5.1958
जन्म समय : 5.45
जन्म स्थान : दिल्ली
देश : भारत

लग्न कुंडली
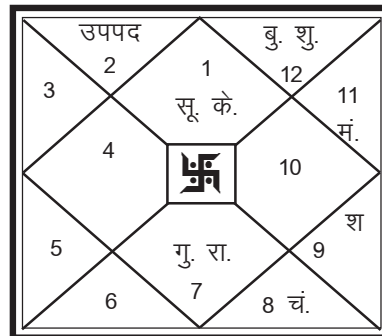
अमेरिका यात्रा के दौरान जातक पर शुक्र/बृहस्पति/राहु की दशा प्रभावी थी। शुक्र की स्थिति का विश्लेषण ऊपर किया जा चुका है। बृहस्पति लग्न से द्वादशेश है प्रत्यंतर्दशानाथ राहु विदेश यात्रा का कारक है।

शनि और बृहस्पति का गोचर पहली यात्रा के दौरान जिस राशि में हुआ था उसी राशि में हो रहा था, इसलिए उनकी स्थिति की व्याख्या यहां आवश्यक नहीं है।

ऊपर के विश्लेषण से सिद्ध हो जाता है कि इस उदाहरण के लिए भी दशा तथा गोचर पैरामीटरों का सिद्धांत पूरी तरह उपयुक्त है।

उदाहरण कुंडली–3

जन्मतिथि : 19.10.1952
जन्म समय : 15.15
जन्म स्थान : नजीबाबाद
देश : भारत

लग्न कुंडली
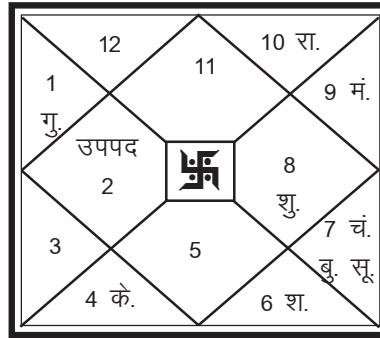
कुंडली 3 के जातक ने ज्योतिषीय सम्मेलन के सिलसिले में 01.09.2002 को मारीशस की यात्रा की। उसकी कुंडली के द्वादश में राहु स्थित है जो विदेश यात्रा का संकेत देता है। जातक किसी सरकारी विभाग में कार्यरत था जहां विदेश यात्रा की कोई संभावना नहीं थी। ऐसे में ज्योतिष का उसका ज्ञान काम आया क्योंकि उसकी कुंडली में लग्न से द्वादशम भाव में राहु के स्थित होने के कारण विदेश यात्रा की पूरी–पूरी संभावना थी। 01.09.2001 को उस पर शनि/बृहस्पति/शनि की दशा प्रभावी थी। महादशानाथ शनि द्वादशम भाव का स्वामी है और अष्टम भाव में स्थित था जो विदेश यात्रा का भाव है। अंतर्दशानाथ बृहस्पति उपपद से द्वादशम भाव में स्थित है। उस समय जातक पर शनि की प्रत्यंतर्दशा प्रभावी थी।

01.09.2001 को उपपद भाव वृष पर शनि का गोचर चल रहा था। मिथुन पर बृहस्पति का गोचर चल रहा था जहां से इसकी दृष्टि चंद्र से द्वादशेश पर पड़ रही थी। इस तरह दशा तथा गोचर का सिद्धांत पूरी तरह उपयुक्त था।

कुंडली 4 के जातक की जन्म कुंडली के लग्न से नवम भाव में राहु स्थित है, जो विदेश यात्रा का सूचक है। एक लिमिटेड कंपनी के वरिष्ठ पदाधिकारी के रूप में जातक ने विश्व के अनेक देशों की यात्रा की किंतु 01.09.2001 को एक ज्योतिषीय सम्मेलन के सिलसिले में उसने मारीशस की यात्रा की। मारीशस की यात्रा के दिन उस पर शनि/चंद्र/बृहस्पति की दशा प्रभावी थी। जन्म कुंडली में राहु–शनि की युति है। राहु विदेश यात्रा का कारक है। चंद्र अंतर्दशानाथ था जिस पर चंद्र से द्वादशेश की दृष्टि थी।जन्म कुंडली के द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति की अंतर्दशा चल रही थी। यात्रा के दिन वृष पर शनि का गोचर चल रहा था जहां से उसकी दृष्टि उपपद भाव पर पड़ रही थी। उपपद से द्वादशम भाव मिथुन पर बृहस्पति का गोचर चल रहा था।

उदाहरण कुंडली–4

जन्मतिथि : 22.08.1945
जन्म समय : 11.2
जन्म स्थान : कपूरथला
देश : भारत

लग्न कुंडली
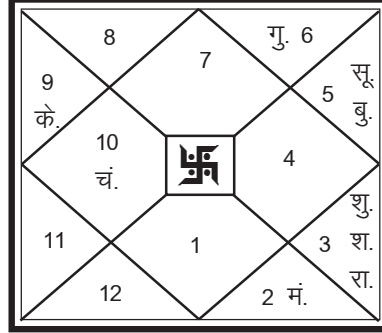
विदेश में स्थायी आवास :

विदेश में स्थायी आवास से संबंद्ध योगों की व्याख्या ऊपर की जा चुकी है। यहां इस क्रम में उदाहरण स्वरूप कुछ कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

ऊपर वर्णित कुंडली एक लड़के की है जो उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गया। शिक्षा पूरी कर लेने के बाद उसने अमेरिका में ही विवाह किया और वहीं बस गया। जन्मकुंडली में पंचमेश सूर्य अष्टम भाव में द्वादशेश से युत है। पंचमेश के द्वादशम भावेश के संबंध के कारण जातक साथ उच्च शिक्षा प्राप्त करने

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 19.11.1947
जन्म समय : 15.30
जन्म स्थान : जलंधर
देश : भारत

लग्न कुंडली

2
रा.
1
12
3
11
श.
4
10
चं.
5
मं.
7
के. बु.
9
6
8
गु. सू. शु.
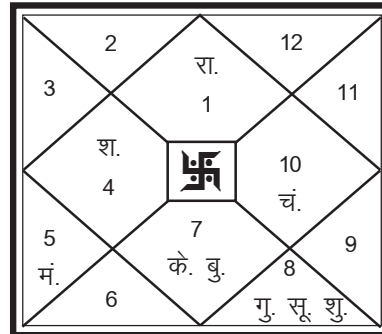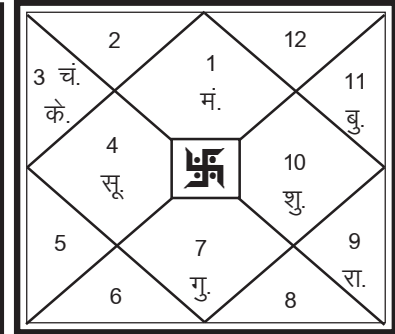
नवांश कुंडली

लिए विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ। सप्तमेश शुक्र भी अष्टम अर्थात् विदेश भाव में स्थित और द्वादशेश से युत था। इसी से जातक का विवाह विदेश में हुआ और वह वहीं बस गया। लग्न मेष है। जन्मकुंडली का चतुर्थ भाव नैसर्गिक अशुभ ग्रह शनि से प्रभावित है। चंद्र से चतुर्थ भाव अशुभ ग्रह राहु से प्रभावित है। नवांश कुंडली के चतुर्थ भाव पर अशुभ ग्रह सूर्य का अधिकार है और उस पर अशुभ मंगल की दृष्टि है। नवांश कुंडली का चतुर्थ भाव राहु–केतु से पीड़ित है। जन्म कुंडली का पादलग्न धनु है और चतुर्थेश पादलग्न से द्वादशम और लग्न से अष्टम भाव में स्थित है। दोनों ही भाव दुःस्थान हैं और इसी से पीड़ित हैं।

ऊपर के विश्लेषण से स्पष्ट है कि विदेश में स्थायी आवास के सभी ज्योतिषीय योग उक्त कुंडली में विद्यमान हैं।

उदाहरण कुंडली–2

जन्मतिथि : 21.01.1950
जन्म समय : 21.25
जन्म स्थान : हरिद्वार
देश : भारत

लग्न कुंडली

नवमांश कुंडली
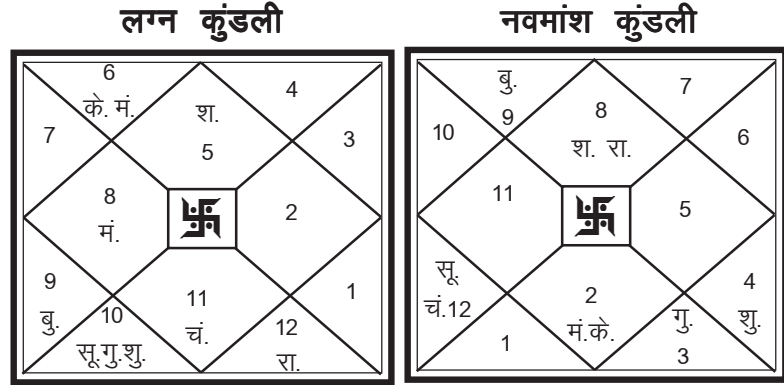
कुंडली 2 एक महिला चिकित्सक की है जो प्रशिक्षण के लिए अमेरिका गई और वहीं बस गई। लग्न मीन है। चंद्र लग्न में स्थित है। अशुभ मंगल चंद्र और लग्न से चतुर्थ भाव में स्थित है। नवांश कुंडली में चंद्र चतुर्थेश है जो राहु–केतु तथा शनि से प्रभावित है। इसीलिए नवांश का चतुर्थेश भी पीड़ित है। कन्या पाद लग्न है। पाद लग्न से चतुर्थ भाव पर शनि का अधिकार मंगल की दृष्टि हैं अतः पादलग्न से चतुर्थ भाव भी पीड़ित है। जन्मकुंडली में दशमेश बृहस्पति शनि से युत है। द्वादशेश दशम भाव में स्थित है जो जातक के विदेश में उद्यम का द्योतक है।

उदाहरण कुंडली–3

जन्मतिथि : 21.01.1950
जन्म समय : 21.25
जन्म स्थान : हरिद्वार
देश : भारत

लग्न कुंडली

नवमांश कुंडली
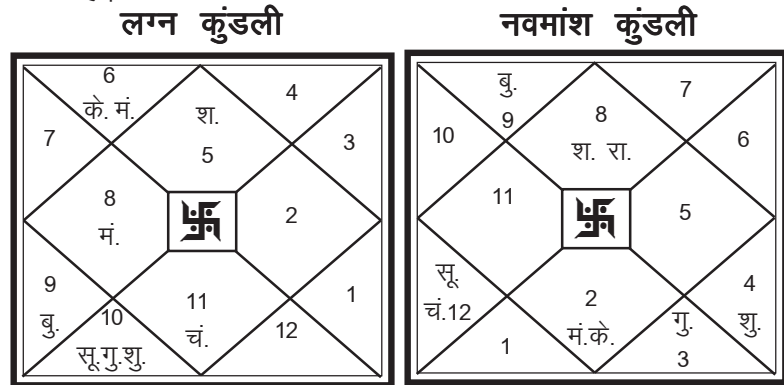
उपर्युक्त कुंडली 3 एक पुरुष की है जो विवाह के बाद अमेरिका में बस गया। कुंडली में सप्तमेश शनि पर सप्तम भाव से द्वादशेश चंद्र की दृष्टि है। सप्तम भाव विवाह का भाव है जो विदेश में विवाह का सूचक है। अब विदेश में स्थायी आवास के ज्योतिषीय योग का विश्लेषण करें।

लग्न से चंतुर्थेश मंगल राहु–केतु से घिरा है इसलिए पीड़ित है। चंद्र से चतुर्थ भाव पर नैसर्गिक अशुभ ग्रह शनि की दृष्टि है, इसलिए यह भाव भी पीड़ित है। जन्मकुंडली में मिथुन पादलग्न है और पादलग्न से चतुर्थ भाव में केतु तथा मंगल स्थित हैं, इसलिए पीड़ित हैं। नवांश का चतुर्थेश शनि राहु–केतु से घिरा है, इसलिए यह भी अशुभ ग्रहों से पीड़ित है। इस जन्मकुंडली में विदेश में स्थायी आवास के सभी योग विद्यमान हैं, इसलिए जातक का विदेश में स्थायी आवास संभव हुआ।

उक्त कुंडलियों में एक बात उल्लेखनीय है कि चतुर्थ और चतुर्थेश राहु–केतु से घिरे हैं। उनकी यह स्थिति विदेश में स्थायी आवास के अवसर दृढ़ करती है।

पाठ 11
भूमि/संपत्ति/वाहन/मूल्यवान घरेलू वस्तुओं का काल निर्धारण

जैसा कि भावों के कारकत्व के अध्याय में कहा जा चुका है, चतुर्थ भाव भूमि, संपत्ति और वाहन का कारक है। मंगल भूमि और संपत्ति का कारक है शुक्र वाहन और अन्य मूल्वान घरेलू वस्तुओं का कारक है। भू–संपत्ति, वाहन, विलास की वस्तुओं आदि के फलादेश के लिए वर्ग कुंडली चतुर्मास डी–4 का विश्लेषण किया जाना चाहिए। चतुर्मास को राशि कुंडली कहते हैं।

विश्लेषण के समय चतुर्मास के लग्न और चतुर्थांश चतुर्थ भाव पर ध्यान दिया जाना चाहिए। चतुर्थांश में मंगल तथा शुक्र के स्थान बल की जांच भी की जानी चाहिए। जन्मकुंडली के चतुर्थेश की स्थिति की जांच करना भी अति आवश्यक है। यदि चतुर्थांश का लग्न बली हो और लग्नस्वामी किसी शुभ भाव में स्थित हो, तो जातक को संपत्ति, वाहन तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है यदि षष्ठम, अष्टम और द्वादशम भावों में से किसी भी अशुभ भाव में स्थिति होने के कारण चतुर्थांश का लग्न और लग्नस्वामी दुर्बल हो, तो जातक को अचल संपत्ति या वाहन की प्राप्ति नहीं होगी।

भूमि और संपत्ति की जांच के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं की जांच करना आवश्यक है :

1. चतुर्थ भाव
2. चतुर्थ स्वामी
3. जन्मकुंडली और चतुर्थांश में मंगल का बल
4. मंगल से चतुर्थ भाव
5. चतुर्थांश का लग्नस्वामी
6. चतुर्थांश का चतुर्थ भाव
7. चतुर्थांश में चतुर्थेश का बल

यदि ऊपर वर्णित ग्रह, भाव, ग्रहों का बल आदि शुभ हों, शुभ ग्रहों की दृष्टि में हों, तो जातक को प्रचुर भू–संपत्ति की प्राप्ति होगी, किंतु यदि दुःस्थान अर्थात् षष्ठम, अष्टम और द्वादशम भावों में हों, उन पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो, तो जातक को भूमि और संपत्ति की प्राप्ति नहीं होगी।

वाहन और मूल्यवान घरेलू वस्तुओं की जांच के लिए निम्नलिखित बिंदुओं की जांच की जानी चाहिए।

1. चतुर्थ भाव
2. चतुर्थ स्वामी
3. लग्न कुंडली और चतुर्थांश कुंडली में शुक्र
4. शुक्र से चतुर्थ भाव

5. चतुर्थांश कुंडली का लग्नस्वामी
6. चतुर्थांश कुंडली का चतुर्थ भाव
7. चतुर्थांश कुंडली में चतुर्थेश का बल

यदि ऊपर वर्णित ग्रह, भाव, ग्रहों का बल आदि शुभ हों, शुभ भावों में हों और शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हों, तो जातक को वाहन तथा अन्य मूल्यवान घरेलू वस्तुएं प्राप्त हो सकती हैं। इनके दुर्बल होने पर वाहन सुख या अन्य मूल्यवान घरेलू वस्तुओं का सुख प्राप्त नहीं हो सकता है।

भूमि/संपत्ति/वाहन/मूल्यवान घरेलू वस्तुओं के सूचक लग्न कुंडली और चतुर्थांश कुंडली की जांच के बाद प्रश्न उठता है कि जातक को उक्त वस्तुओं की प्राप्ति कब होगी। उक्त वस्तुओं की प्राप्ति का काल निर्धारण ग्रहों की प्रभावी दशा के अनुसार किया जा सकता है।

जातक को निम्नलिखित ग्रहों की दशा के अंतर्गत भूमि/संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है।

1. चतुर्थेश की दशा।
2. चतुर्थेश के ग्रहाक्रांत राशीश की दशा।
3. चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से युत या दृष्ट ग्रहों की दशा।
4. भूमि और संपत्ति के कारक मंगल की दशा
5. मंगल से चतुर्थेश की दशा।
6. चतुर्थ भाव में स्थित ग्रहों की दशा।
7. चतुर्थांश कुंडली के लग्नेश की दशा।

वाहन तथा मूल्यवान घरेलू वस्तुओं की प्राप्ति की दशाएं :

1. वाहन तथा अन्य विलासिता सामग्रियों के कारक शुक्र की दशा।
2. शुक्र से चतुर्थेश।
3. शुक्र के ग्रहाक्रांत राशीश की दशा
4. चतुर्थांश कुंडली के लग्नेश की दशा।
5. चतुर्थ भाव में स्थित और चतुर्थेश से युत तथा चतुर्थेश और चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहे ग्रहों की दशा।

गोचर पैरामीटर :

ऊपर उल्लिखित ग्रहों की दशाओं के दौरान शनि और बृहस्पति का निम्नलिखित किन्हीं दो स्थितियों में दृष्टि या युति संबंध होना चाहिए :

1. चतुर्थ भाव 2. चतुर्थेश 3. लग्न या चंद्र से सप्तम भाव या सप्तमेश।

संपत्ति/भूमि/वाहन की प्राप्ति के काल निर्धारण में ये पैरामीटर कितने उपयुक्त हैं यह देखने के लिए नीचे कुछ उदाहरण कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 04.10.1957
जन्म समय : 04.15
जन्म स्थान : दिल्ली
देश : भारत

लग्न कुंडली
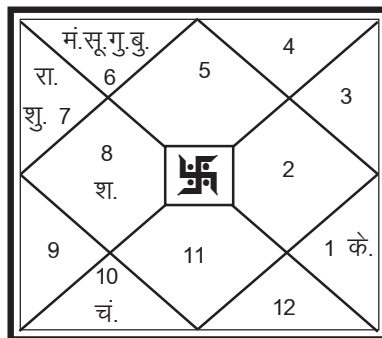
चतुर्थांश कुंडली
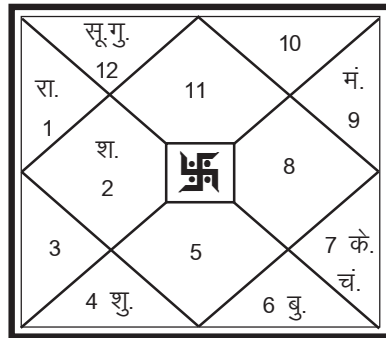
उपर्युक्त कुंडली के जातक की शैक्षिक योग्यता मात्र उच्चतर माध्यमिक है। वह करोड़ों की भूमि/संपत्ति/वाहन का मालिक है। इस कुंडली से स्पष्ट पता चल जाता है कि जन्मकुंडली और चतुर्थांश, संपत्ति/भूमि/वाहन/मूल्यवान घरेलू वस्तुओं से संबद्ध वर्ग कुंडली में ग्रहों की दशा के दौरान जातक को उनका भूमि/संपत्ति/वाहन का वरदान कैसे प्राप्त हुआ। जन्मकुंडली में चतुर्थेश मंगल एकादशेश तथा द्वितीयेश के साथ द्वितीय भाव में स्थित है। लग्नेश तथा पंचमेश बृहस्पति भी स्थित हैं। कुंडली में अत्यंत शुभ धनयोग है।

मैं जातक को व्यक्तिगत रूप से जानता हूं, इसलिए मुझे पता है कि उसने संपत्ति में धन निवेश किया है जिसका पर्याप्त लाभ उसे मिला है। अब चतुर्थांश के लग्नेश की स्थिति पर प्रकाश डालूंगा। चतुर्थांश का लग्नेश शनि चौथे भाव में स्थित है, जो संपत्ति/वाहन का भाव है।

मित्र ग्रह शुक्र की राशि से यह चतुर्थांश के लग्न को देख रहा है, जो शुभ है। जातक ने अधिकांश संपत्ति जन्मकुंडली के पंचमेश बृहस्पति की दशा के दौरान अर्जित की, जो चतुर्थेश तथा भूमि/संपत्ति के कारक मंगल से युत है।

जातक ने 16.10.2002 से 26.10.2002 के मध्य दो बार संपत्ति खरीदी–पहली ग्रेटर नोइडा के अंसल प्लाज़ा में एक व्यविसायिक संपत्ति और दूसरी डी.डी.ए. द्वारा हाल में वसंत कुंज में आवंटित एक एच. आइ.जी फ्लैट।

16.10.2002 से 31.10.2002

जातक पर शनि/बुध/शुक्र की दशा प्रभावी थी। शनि लग्न के चतुर्थ भाव में स्थित है। यह चतुर्थांश का लग्नेश भी है। बुध लग्न कुंडली के चतुर्थेश तथा भूमि और संपत्ति के कारक मंगल से युत है। शुक्र चतुर्थांश का चतुर्थेश है।

शनि मिथुन में गोचर कर रहा था और वक्रीगति के कारण उसकी मंगल पर दृष्टि थी। बृहस्पति कर्क में गोचर कर रहा था और जन्मकुंडली के चतुर्थ भाव पर उसकी दृष्टि थी। इससे स्पष्ट होता है कि दशा

और गोचर पैरामीटर इस जातक के लिए पूरी तरह उपयुक्त हैं।

जातक ने मई 1996 में एक इस्टीम कार खरीदी। उस समय जातक पर बृहस्पति/मंगल/शुक्र की दशा प्रभावी थी। दशानाथ बृहस्पति की द्वितीय भाव में चतुर्थेश मंगल के साथ युति थी। मंगल चतुर्थेश है और प्रत्यंतर्दशानाथ शुक्र वाहन का कारक है। मई 1996 में शनि मीन में गोचर कर रहा था जहां से इसकी दृष्टि चतुर्थेश मंगल पर पड़ रही थी। धनु पर बृहस्पति का गोचर चल रहा था।

उदाहरण कुंडली–2

जन्मतिथि : 19.10.1952
जन्म समय : 15.15
जन्म स्थान : नजीबाबाद
देश : भारत
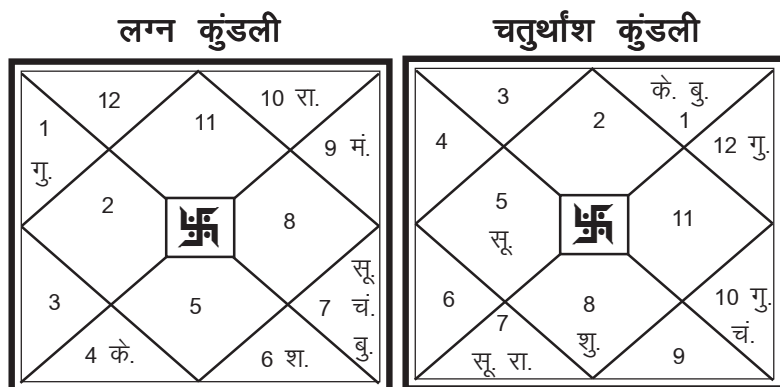
लग्न कुंडली

चतुर्थांश कुंडली

कुंडली 2 में चतुर्थ भाव पर उसके स्वामी शुक्र की दृष्टि है। डी–के लग्न पर चतुर्थांश के लग्नेश की भी दृष्टि है। स्थिति अत्यंत शुभ है इसलिए जातक ने 16.10.1992 को एक सुंदर कॉलोनी में 100 वर्ग गज भूखंड पर बना एक मकान खरीदा।

जातक पर शनि/शुक्र/राहु की दशा प्रभावी थी। दशानाथ शनि चंद्र से चतुर्थेश है। अंतर्दशानाथ शुक्र लग्न कुंडली का चतुर्थेश है और चतुर्थांश कुंडली के चतुर्थ भाव पर उसकी दृष्टि है। स्थिति पूरी तरह शुभ है। प्रत्यंतर्दशानाथ राहु की लग्न कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि है।

16.10.192 को शनि मकर में गोचर कर रहा था और सप्तमेश सूर्य पर इसकी दृष्टि थी, जो सप्तम भाव अर्थात् चतुर्थ से चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र से चतुर्थेश शनि से युत बृहस्पति का कन्या में गोचर चल रहा था।

जातक ने जनवरी 1999 में एक मारुति 800 कार खरीदी।

जातक पर शनि/राहु/बृहस्पति की दशा प्रभावी थी। दशानाथ शनि चंद्र से चतुर्थेश है जबकि अंतर्दशानाथ राहु की जन्मकुंडली के चतुर्थ भाव पर और वक्री होने के कारण प्रत्यंतर्दशानाथ बृहस्पति की चतुर्थेश शुक्र पर दृष्टि थी।

जनवरी 1999 में शनि का मेष में गोचर चल रहा था और चतुर्थ से चतुर्थ भाव सप्तम भाव के स्वामी सूर्य पर उसकी दृष्टि थी। बृहस्पति का कुंभ में गोचर चल रहा था जहां से उसकी दृष्टि लग्न कुंडली के सप्तम अर्थात् चतुर्थ से चतुर्थ पर पड़ रही थी।

पाठ 12
छोटे भाई–बहनों के जन्म का काल निर्धारण

तृतीय भाव छोटे भाई–बहनों, पराक्रम, मित्रों, नौकरों आदि का भाव है। इसे सहोदर भाव भी कहते हैं। मंगल छोटे भाई–बहनों का कारक है। द्रेष्काण छोटे सहोदरों से संबंद्ध वर्ग कुंडली है। यदि तृतीय भाव और तृतीयेश शुभ स्थिति में हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो जातक को छोटे सहोदरों का सुख मिलेगा। द्रेष्काण कुंडली में तृतीयेश के स्थान और बल का मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए। द्रेष्काण कुंडली के लग्न और लग्नेश पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार द्रेष्काण कुंडली में लग्न कुंडली के तृतीयेश की स्थिति पर भी ध्यान देना आवश्यक है। छोटे भाई या बहन का लिंग निर्धारण जन्म कुंडली से किया जा सकता है।

1. यदि तृतीय भाव में कोई पुरुष राशि हो, पुरुष राशि पुरुष नवांश में तृतीयेश स्थित हो और पुरुष नक्षत्र के नक्षत्र में पुरुष नवांश हो, तो छोटी बहनों की अपेक्षा छोटे भाई अधिक होंगे।
2. यदि स्त्री नक्षत्र के नक्षत्र में तृतीय भाव में कोई स्त्री राशि हो और स्त्री राशि स्त्री नवांश में तृतीयेश हो, तो बहनों की संख्या अधिक होगी।

छोटे भाई–बहनों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का विश्लेषण करना चाहिए।

1. तृतीय भाव
2. तृतीय स्वामी
3. छोटे भाई–बहनों के कारक मंगल
4. द्रेष्काण कुंडली के लग्न तथा लग्नेश की स्थिति
5. द्रेष्काण कुंडली में लग्न के तृतीयेश की स्थिति

यदि ऊपर वर्णित ग्रहों और भावों पर शुभ ग्रहों का प्रभाव हो, तो छोटे भाई–बहनों का सुख प्राप्त होता है। किंतु यदि ये ग्रह और भाव अशुभ ग्रहों से प्रभावित हों, तो छोटे भाई–बहनों का सुख प्राप्त नहीं होता।

छोटे भाई–बहनों की स्थिति की जानकारी जन्म कुंडली तथा संबद्ध वर्ग कुंडली द्रेष्काण कुंडली में तृतीयेश, तृतीय भाव तथा छोटे भाई–बहनों के कारक मंगल के बल के आधार पर प्राप्त की जा सकती है।

छोटे भाई–बहनों के जन्म काल के निर्धारण के लिए प्रभावी दशा प्रणाली का अध्ययन करना चाहिए। इनका जन्म निम्नलिखित ग्रहों की दशा में होता है।

1. लग्न या चंद्र से तृतीयेश की दशा।
2. तृतीयेश के ग्रहाक्रांत राशीश की दशा।

3. तृतीय भाव से तृतीय पंचमेश की दशा।
4. द्रेष्काण कुंडली तथा संबद्ध वर्ग कुंडली के लग्नेश की दशा।
5. छोटे भाई–बहनों के कारक मंगल की दशा।
6. तृतीय भावस्थ ग्रहों की दशा जिनका तृतीय भाव से दृष्टि और तृतीयेश से युति संबंध हो।

गोचर पैरामीटर

ऊपर उल्लिखित ग्रहों की दशा के दौरान शनि/बृहस्पति का निम्नलिखित किन्हीं दो स्थितियों में संयोग अवश्य होना चाहिए।

1. लग्न या चंद्र से तृतीय भाव 2. चंद्र या लग्न से तृतीयेश 3. लग्न या चंद्र से पंचम भाव 4. लग्न या चंद्र से पंचमेश। ऊपर वर्णित पैरामीटर छोटे भाई–बहनों के जन्म काल के निर्धारण में कितने उपयुक्त हैं यह देखने के लिए यहां कुछ उदाहरण कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

31.08.1986 को कुंडली 1 के जातक की छोटी बहन का जन्म हुआ। उस दिन अर्थात् 31.08.1986 को राहु/चंद्र/राहु की दशा चल रही थी। अब दशा पद्धति की जांच करें। दशा जन्म कुंडली में तृतीय भाव स्थित राहु की चल रही थी। अंतर्दशा पंचमेश और तृतीय से तृतीय भावेश चंद्र की थी। प्रत्यंर्दशा राहु की थी जो जन्मकुंडली के तृतीय भाव में स्थित था। 31.08.1986 को शनि वृश्चिक में गोचर कर रहा था जहां से उसकी दृष्टि जन्म कुंडली के तृतीय भाव पर पड़ रही थी। बृहस्पति का गोचर कुंभ में चल रहा था। वह वक्री था इसलिए उसकी दृष्टि जन्मकुंडली के तृतीय भाव पर पड़ रही थी।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 10.12.1984
जन्म समय : 12.55
जन्म स्थान : दिल्ली
देश : भारत

लग्न कुंडली

द्रेष्काण कुंडली
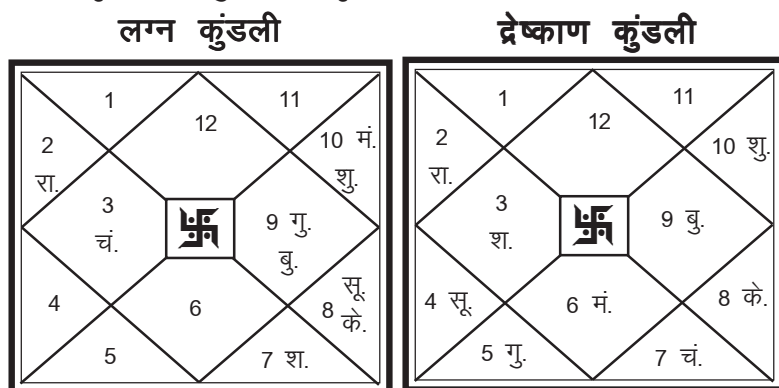
कुंडली 2 एक कन्या की है जिसके छोटे भाई का जन्म 30.11.1988 को हुआ। उस दिन अर्थात 30.11.1988 को कन्या पर बृहस्पति/बुध/मंगल की दशा प्रभावी थी। दशा बृहस्पति की थी जिसकी दृष्टि जन्म कुंडली के तृतीयेश अर्थात् बुध पर पड़ रही थी। अंतर्दशा जन्म कुंडली के तृतीयेश बुध की चल रही थी। प्रत्यंतर्दशा छोटे भाई–बहनों के कारक मंगल की थी। वृष में बृहस्पति का गोचर चल रहा था जहां से उसकी दृष्टि जन्म कुंडली के पंचम अर्थात् तृतीय से तृतीय भाव पर पड़ रही थी। शनि का गोचर धनु में चल रहा था।

उदाहरण कुंडली–2

जन्मतिथि : 31.08.1986
जन्म समय : 4.15
जन्म स्थान : दिल्ली
देश : भारत

लग्न कुंडली
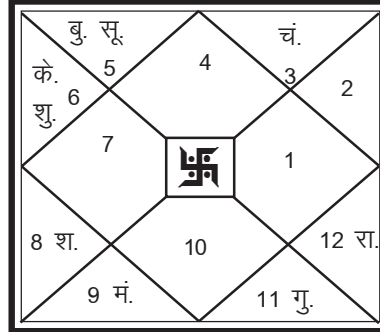
द्रेष्काण कुंडली
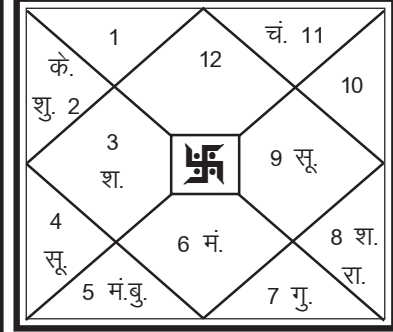
दोनों कुंडलियों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि दशा और गोचर पैरामीटर पूरी तरह अनुकूल हैं और छोटे भाई–बहनों के जन्म के काल निर्धारण में अत्यंत सहायक हैं।

पाठ 13

ज्योतिष के द्वारा आय के स्रोतों का निर्धारण

आय और लाभ एकादश भाव के प्रमुख कारकत्व हैं। बृहस्पति एकादश भाव का कारक है। एकादशेश अपने नैसर्गिक कारकत्व और जन्मकुंडली में अपनी विभिन्न स्थितियों के अनुसार आय के स्रोतों का संकेत देता है। विभिन्न ग्रहों के एकादशेश से युति और दृष्टि संबंधों का किसी जातक के आय के स्रोतों पर निश्चित प्रभाव पड़ता है।

आय के स्रोतों के निर्धारण के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए।

1. एकादशेश का नैसर्गिक कारकत्व।
2. भाव जिसमें एकादशेश स्थित है।
3. एकादश भाव में स्थित ग्रह और उनका कारकत्व।
4. एकादशेश से युत या दृष्ट ग्रह।

जातक के आय के स्रोत एकादशेश के नैसर्गिक कारकत्व, जिस भाव में वह स्थित है उसके कारकत्व, एकादशम भाव स्थित ग्रहों के कारकत्व और एकादशेश से युत या दृष्ट ग्रहों के कारकत्व के अनुरूप होंगे।

ज्योतिष की सहायता से आय के स्रोतों का निर्धारण करने में सुगमता होती है। लोग यह जानने को उत्सुक रहते हैं कि कौन सा क्षेत्र उनकी अच्छी आय के लिए उपयुक्त होगा। कौन से ग्रह आय के स्रोतों के प्रति क्या संकेत देते हैं इसका ज्ञान प्राप्त करने में ज्योतिष बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

नीचे पाठकों की सहायता के लिए कुंडली के विभिन्न भावों में एकादशेश की स्थिति के अनुरूप आय के संभावित स्रोतों का उल्लेख किया जा रहा है।

एकादशेश का स्थान	**आय के संभावित स्रोत**
प्रथम भाव	स्वप्रयास से धनोपार्जन
द्वितीय भाव	कौंटुबिक व्यापार से आय, उच्च पदस्थ लोगों/मित्रों की सहायता से धनार्जन।
तृतीय भाव	उद्यमिता के द्वारा तथा यातायात, परिवहन, लेखन, प्रकाशन तथा खेल के क्षेत्र मे धनोपार्जन।
चतुर्थ भाव	भू–संपत्ति, शिक्षण संस्थान, होटल आदि के व्यवसाय से आय।
पंचम भाव	शिक्षा व्यवसाय, सट्टेबाजी, बैंकिग तथा मंत्रियों के साहचर्य से आय।
षष्ठम भाव	महाजनी, वकालत, चिकित्सा, आदि के पेशे से धनोपार्जन।
सप्तम भाव	विदेश, आयात–निर्यात, विलासिता के सामानों या साझेदारी के व्यवसाय से आय।

अष्टम भाव — विदेश, बीमा व्यवसाय और नौकरी से आय।

नवम भाव — धार्मिक कार्यों, विदेश यात्राओं या शिक्षण से आय।

दशम भाव — स्वप्रयास से आय। यह दशम भाव की राशि और दशम भावस्थ ग्रहों पर निर्भर करता है।

एकादश भाव — महाजनी, निवेश, वित्तीय संस्थाओं तथा बड़े भाई की सहायता से आय

द्वादश भाव — विदेश, अस्पताल, बहुराष्ट्रीय कंपनियों से आय।

नीचे यह देखने के लिए कि आय के स्रोतों का निर्धारण कैसे हो सकता है, विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े कुछ व्यक्तियों की कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत है।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 05.01.1959
जन्म समय : 2.30
जन्म स्थान : चंडीगढ़
देश : भारत
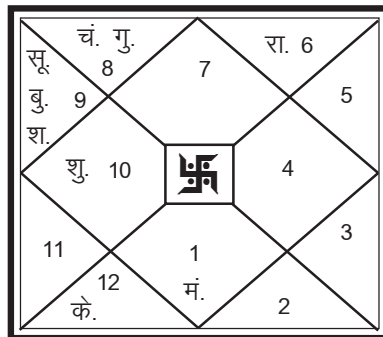
कुंडली 1 प्रख्यात क्रिकेट खिलाड़ी कपिल देव की है। इसके तीसरे भाव में एकादशेश स्थित है। तृतीय भाव खेलों, उद्यमिता, यातायात का द्योतक है। यह चतुर्थेश से युत है जो होटल का द्योतक है। यह द्वादशेश बुध से युत है जो विदेश का सूचक है। एकादशेश की स्थिति और चतुर्थेश तथा द्वादशेश की युति के कारण खेल, विदेश तथा होटल कपिलदेव की आय के स्रोत हैं।

उदाहरण कुंडली–2

जन्मतिथि : 15.05.1966
जन्म समय : 20.00
जन्म स्थान : रत्नागिरि
देश : भारत
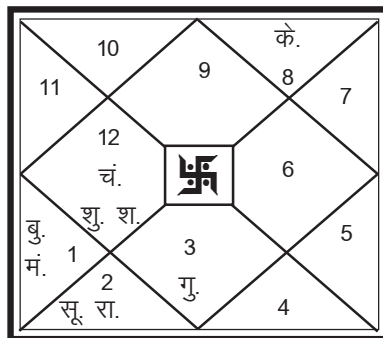
कुंडली 2 प्रसिद्ध सिने तारिका माधुरी दीक्षित की है। उनकी कुंडली में फिल्मोद्योग का कारक शुक्र एकादशेश है, जो उच्चस्थ है। यह द्वितीयेश तथा तृतीयेश शनि से युत है जो उच्च पदस्थ मित्रों का सूचक है। यह अष्टमेश चंद्र से भी युत है जो विदेश का द्योतक है। यह सर्वविदित है कि फिल्म उद्योग, विदेश और उद्यमिता इनकी आय के स्रोत हैं। इन्होंने हाल में अपनी कंपनी खोली है।

उदाहरण कुंडली– 3

जन्मतिथि : 15.02.1944
जन्म समय : 13.30
जन्म स्थान : मुंबई
देश : भारत
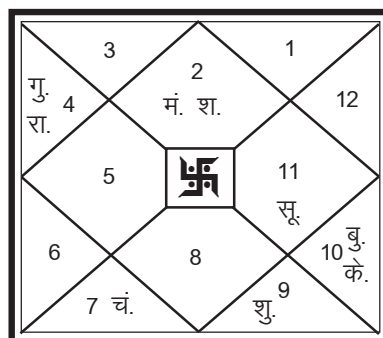
कुंडली 3 प्रख्यात उद्योगपति नुस्ली वाडिया की है। इसके तृतीय भाव में एकादशेश स्थित है जो उद्यमिता का प्रतीक है। इस पर व्यवसाय के कारक बुध और उद्योग के कारक शनि की दृष्टि है। वह एक प्रख्यात उद्योगपति हैं और उद्योग उनकी आय का स्रोत है।

उदाहरण कुंडली–4

जन्मतिथि : 19.10.1952
जन्म समय : 15.15
जन्म स्थान : नजीबाबाद
देश : भारत
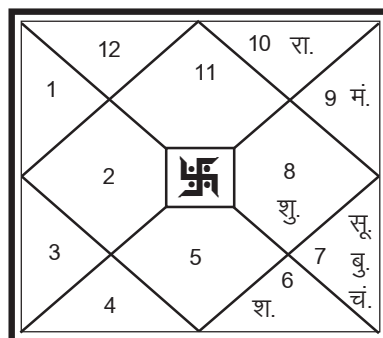
कुंडली 4 एक सरकारी पदाधिकारी की कुंडली है, जो ज्योतिष का ज्ञाता है और ज्योतिषीय वृत्ति से अच्छी आय अर्जित करता है। प्रभागीय मामलों में कानूनी सलाहकार के रूप में भी वह अच्छी आय अर्जित करता है। एकादशेश बृहस्पति तृतीय भाव में स्थित है और उस पर सरकार के कारक सूर्य की दृष्टि है, इसीलिए उसे सरकार से आय प्राप्त होती है। बृहस्पति पर बुध की दृष्टि है, जिससे ज्योतिषीय वृत्ति से उसकी आय होती है, क्योंकि बुध इसका कारक है। बृहस्पति पर चंद्र की दृष्टि भी है। चंद्र षष्ठेश है, जो वकालत के पेशे का द्योतक है। इसलिए जातक प्रभागीय मामलों में कानूनी सलाह से धनार्जन करता है।

उदाहरण कुंडली–5

जन्मतिथि : 11.01.1973
देश : भारत
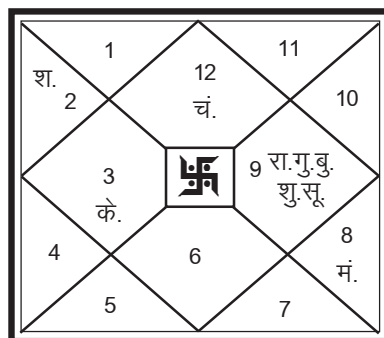
कुंडली 5 प्रख्यात क्रिकेट खिलाड़ी राहु द्रविड़ की है। इसके तृतीय भाव में एकादशेश स्थित है जो खेल का भाव है। इस पर द्वितीयेश तथा नवमेश मंगल की दृष्टि है जो उच्च पदस्थ व्यक्तियों तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। खेल तथा विदेश यात्रा उनकी आय के स्रोत हैं।

उदाहरण कुंडली–6

जन्मतिथि : 12.12.1950
जन्म समय 23.50
जन्म स्थान : मद्रास
देश : भारत
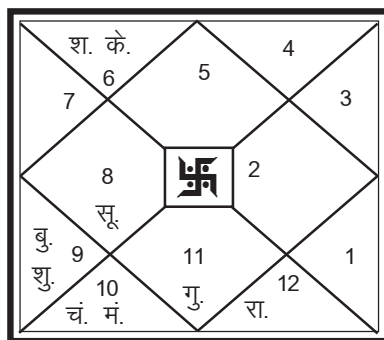
कुंडली 6 प्रख्यात फिल्मी सितारे रजनीकांत की कुंडली है। इस कुंडली के पंचम भाव में फिल्म उद्योग के कारक शुक्र के साथ एकादशेश स्थित है और एकादशम भाव पर दोनों की दृष्टि है। ग्रहों की इस स्थिति के कारण उन्हें फिल्म उद्योग के व्यवसाय से आय होती है।

पाठ 14

जन्मकुंडली के अनुसार फलादेश

मेरे पास ऐसे लोग आते रहते हैं जिनके पास जन्मकुंडली के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। उन्हें न तो अपने जन्म समय का ज्ञान होता है, न जन्म से संबंधित किसी अन्य विषय की जानकारी। वे किसी वर्ष या आयु विशेष का फलादेश जानना चाहते हैं। मैंने समस्या के समाधान की एक सरल विधि विकसित की है। इसके अनुसार, परिवार के सबसे बड़े या सबसे छोटे सदस्य, संतान की संख्या, व्यवसाय, व्यक्तित्व आदि से संबद्ध अतीत में घटी और भविष्य में घटने वाली घटनाओं के मद्देनज़र जन्मकुंडली की प्रामाणिकता की जांच करना पहला चरण है। जन्मकुंडली की प्रामाणिकता सिद्ध हो जाने पर जातक के साथ उसके किसी आयु खंड या वर्ष विशेष के दौरान क्या हुआ या क्या होने वाला है इसका फलकथन आसानी से किया जा सकता है। इस प्रक्रिया को कुंडली आधारित स्नैपशॉट फलादेश कह सकते हैं।

फलादेश कैसे करें :

1. जातक का वर्तमान वर्ष नोट करें।
2. इसमें 12 से भाग दें।
3. शेष नोट करें। पाठ 14
4. अब लग्न से शेष तक की गणना करें। प्राप्तांक भाव का द्योतक होगा। यह भाव उस वर्ष विशेष का शासक भाव होगा। यदि शेष शून्य हो तो इसे 12वां भाव समझना चाहिए।
5. भाव का स्वाभित्व, शासक भाव स्थित ग्रह और शासक भाव के स्वामी से युति या दृष्टि संबंध रखने वाले ग्रहों को नोट करें।

फल :

वर्ष विशेष के दौरान फल निम्नलिखित बिन्दुओं के अनुसार होगा :

1. शासक भाव का कारकत्व
2. शासक भाव के स्वामी ग्रह का कारकत्व
3. शासक भाव का स्वामी जिस भाव में स्थित हो उसका कारकत्व
4. शासक भाव स्वामी के साथ युति या दृष्टि संबंध रखने वाले ग्रहों का कारकत्व
5. शासक भाव पर दृष्टि डालने वाले ग्रहों का कारकत्व

मैंने इन मानदंडों पर की अनेक जन्मकुंडलियों की जांच की और पाया कि 90 प्रतिशत जांच सही थी। यहां प्रक्रिया तथा मानदंडों की परिशुद्धता साबित करने के लिए कुछ कुंडलियों का विश्लेषण प्रस्तुत है:

कुंडली 1 के जातक के जीवन में घटने वाली प्रमुख घटनाएं नीचे की सारणी में उल्लिखित हैं।

इस विधि का प्रयोग कैसे किया जाए यह देखने के लिए हर घटना का अलग–अलग विश्लेषण किया जाना चाहिए।

उदाहरण कुंडली–1

जन्मतिथि : 19.10.1952
जन्म समय : 15.15
जन्म स्थान : नजीबाबाद
देश : भारत
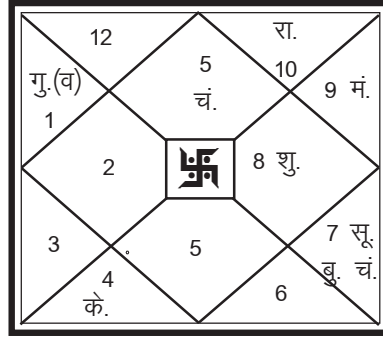
घटना की तिथि	चालू वर्ष	शासक भाव	लग्न से गणना करने पर
31.05.1973 सरकारी विभाग में नियुक्ति	21	9	नवम भाव
26.11.1979 पदोन्नति	28	4	चतुर्थ भाव
26.11.1983 विवाह	31	7	सप्तम भाव
10.12.1984 पुत्री का जन्म	33	9	नवम भाव
31.8.1986 दूसरी पुत्री का जन्म	35	11	एकादशम भाव
21.01.1987 पदोन्नति	35	11	एकादशम भाव
16.10.1992 मकान खरीदा	40	4	चतुर्थ भाव

इक्कीसवें वर्ष के दौरान, जब नवम भाव शासक भाव था, जातक को सरकारी विभाग में नौकरी मिली। स्वामी शुक्र दशम व्यवसाय भाव में है जिस पर द्वितीय तथा एकादशम भाव स्वामी गुरु की दृष्टि है। नवम अर्थात कर्म भाव स्वामी शुक्र की दशम व्यवसाय भाव में स्थिति और गुरु की उस पर दृष्टि के कारण जातक को नौकरी मिली। यह घटना शासक भाव के कारकत्व, उसके स्वाभित्व, उसकी स्थिति और उस पर ग्रह की दृष्टि के अनुसार घटी।

अट्ठाइसवें वर्ष की अवस्था में उसकी पदोन्नति हुई। उस समय चतुर्थ भाव उसका शासक भाव था। शासक ग्रह चतुर्थेश तथा नवमेश शुक्र दशम भाव में स्थित है। शासक ग्रह के स्वाभित्व और दशम भाव में उसकी स्थिति के कारण उसकी उन्नति हुई क्योंकि भाग्येश दशम भाव में स्थित है।

इकतीसवें वर्ष सप्तम भाव के शासक भाव होने के कारण जातक का विवाह हुआ।

जातक की तैंतीसवें वर्ष की आयु में उसकी प्रथम संतान का जन्म हुआ। उस समय नवम भाव शासक भाव था। शिशु का वैकल्पिक भाव पंचम से पंचम था। पंचमेश बुध नवम भाव में स्थित है। पंचमेश की शासक भाव में स्थिति के कारण जातक की पुत्री का जन्म हुआ।

जातक की 35 वर्ष की आयु में उसकी दूसरी पुत्री का जन्म हुआ। उस समय एकादशम भाव शासक

भाव था। एकादशम भाव का स्वामी संतान का कारक गुरु है। उस समय जन्म कुंडली में गुरु की दृष्टि पंचमेश बुध पर थी। फलतः जातक के दूसरी पुत्री हुई।

उसकी 35वें वर्ष की आयु के दौरान पदोन्नति हुई। उस समय एकादशम आय भाव शासक भाव था। इस भाव के स्वामी के वक्री होने के कारण उसकी दृष्टि एकादशम तथा दशम भाव पर थी। इस योग के कारण उस वर्ष जातक की पदोन्नति हुई।

16.10.1992 को उसने एक मकान खरीदा। उस वर्ष चतुर्थ भाव शासक भाव था। स्वामी शुक्र था जो दशम भाव में स्थित था। उसकी चतुर्थ भाव पर दृष्टि थी जो उसका अपना भाव है। इस ग्रहीय स्थिति के कारण जातक को आवास सुख मिला।

कुंडली 2 मिस्र के शाह फारुख की जन्म कुंडली है। उनके जीवन की कुछ प्रमुख घटनाओं का उल्लेख नीचे किया जा रहा है।

उदाहरण कुंडली–2

जन्मतिथि : 11.02.1920
जन्म समय : 18.15
अक्षांश : 30 उ. 02
रेखांश : 31 पू. 02
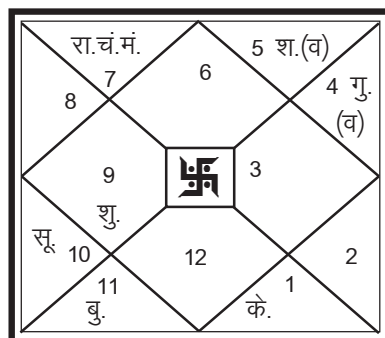
घटना की तिथि	चालू वर्ष	शेष	शासक भाव
17.07.1925 शिक्षा के लिए विदेश यात्रा	6	0	द्वादशम
पिता की मृत्यु अप्रैल 1936	17	5	पंचम
विवाह 1938	19	7	सप्तम

जब उन्हें शिक्षा के लिए विदेश भेजा गया तो वह केवल 6 वर्ष के थे। शेष 0 है। द्वादशम विदेश का द्योतक भाव शासक भाव है। यह पंचम भाव में स्थित है। जो शिक्षा का भाव है। यही कारण था कि वह शिक्षा ग्रहण करने के लिए विदेश गए।

उनकी 17 वर्ष की आयु में उनके पिता की मृत्यु हुई। शेष 5 है। पंचम शासक भाव है। पंचमेश तथा षष्ठेश द्वादश भाव में स्थित थे। उस समय पंचम भाव शासक भाव था और पिता का वैकल्पिक भाव नवम से नवम था। यह छठे भाव का स्वामी भी है। यह सूर्य से द्वितीय है जो पिता का कारक तथा मारक भाव है। यह द्वादश भाव में स्थित है जो सूर्य से अष्टम है। यह पिता का मृत्यु भाव है। इस ग्रह योग के कारण पिता की मृत्यु हुई।

उनकी 19 वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ। शेष 7 है और सप्तम भाव शासक भाव है। गुरु सप्तम भाव का स्वामी है जिसकी जन्मकुंडली में एकादशम से सप्तम भाव पर दृष्टि है। इस ग्रह स्थिति के कारण उनका विवाह उनकी 19 वर्ष की आयु में हुआ।

कुंडली 3 के जातक का विवाह सन् 1971 में हुआ जब उसकी आयु 35 वर्ष थी। एकादशम भाव शासक भाव है। एकादशेश द्वादशम भाव में स्थित है जो शयन सुख का भाव है। इसकी विवाह के नैसर्गिक कारक राहु के साथ युति थी। द्वादशम भाव से इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि है। जो विवाह का भाव इस ज्योतिषीय योग के कारण जातक का विवाह उसकी 35वें वर्ष की आयु में हुआ।

उदाहरण कुंडली–3

जन्मतिथि : 12.06.1947
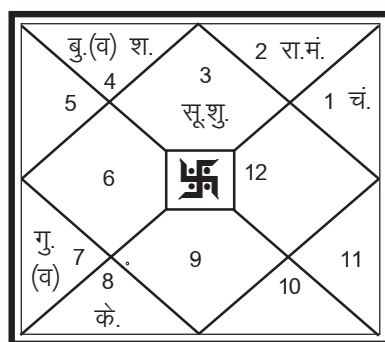
कुंडली 4 एक स्त्री की जन्मकुंडली है जिसका विवाह 29 सितंबर, 1974 को उसकी 28 वर्ष की आयु में हुआ। शेष 4 है। चतुर्थ भाव शासक भाव है। इसका स्वामी मंगल शयन सुख के भाव द्वादश में स्थित है जहां से इसकी दृष्टि सप्तम भाव पर पड़ रही है जो विवाह का भाव है। विवाह भाव के कारकत्व तथा शासक ग्रह के सवामी से दृष्टित भाव के अनुसार हुआ।

उदाहरण कुंडली–4

जन्मतिथि : 14.12.1946
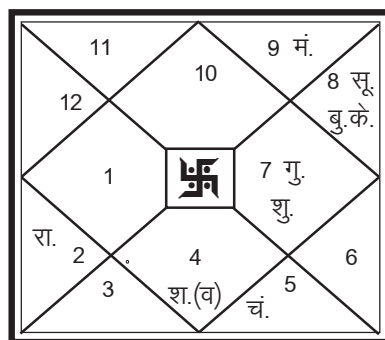
कुंडली 5 के जातक का कारोबार उसकी 68वें वर्ष की आयु में चौपट हो गया। शेष 8 है। अष्टम भाव शासक भाव है। अष्टमेश जातक के दशम भाव में स्थित है और चतुर्थेश तथा नवमेश शुक्र के साथ उसकी युति है। अष्टम भाव व्यवधान तथा विनाश का भाव है। बुध की दशम भाव में स्थिति तथा चतुर्थेश और नवमेश के साथ उसकी युति के कारण उस वर्ष विशेष के दौरान जातक का कारोबार चौपट हुआ।

उदाहरण कुंडली–5

जन्मतिथि : 12.11.1907
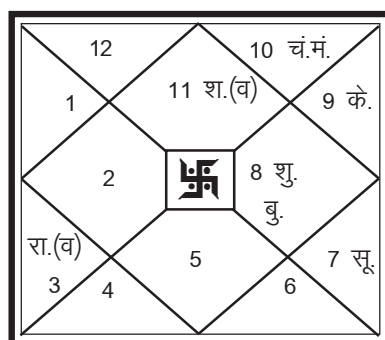
कुंडली 6 एक सरकारी पदाधिकारी की जन्मकुंडली है। उसे अक्तूबर, 1971 के दौरान उच्च सरकारी पद मिला जब उसकी आयु 35 वर्ष थी। शेष 11 है। एकादशम भाव शासक भाव है। मंगल एकादशेश है जो तृतीय भाव में स्थित है और नवम तथा दशम भाव को देख रहा है। एकादशम लाभ भाव, दशम जीविका भाव, तृतीय भाव तथा नवम भाग्य भाव के इस योग के कारण जातक को उच्च सरकारी पद प्राप्त हुआ।

उदाहरण कुंडली–6